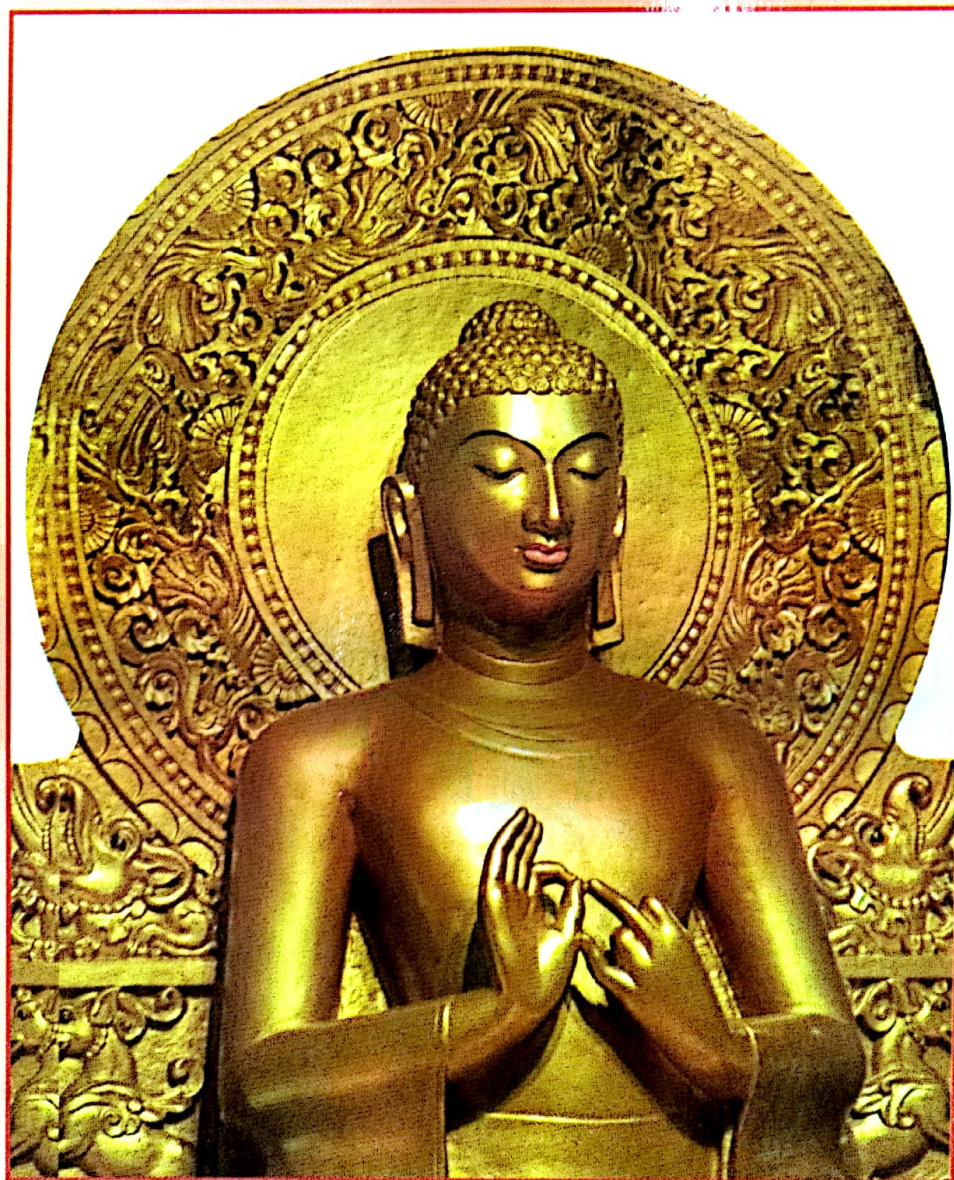


24 वां
अंक
सितम्बर, 2013



चेतना



कार्यालय, महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) बिहार, पटना

चेतना परिवार



बैठे हुए (बाएँ से दाएँ) मो० हाशिम अंसारी, व० ले० अ० (प्रधान संपादक), श्री जॉर्ज सैमुएल, उप महालेखाकार, श्री संजय कुमार, महालेखाकार (ले० एवं ह०), बिहार पटना, श्री राम हित, वरीय उप महालेखाकार, श्री मुकेश कुमार लाल, उप महालेखाकार ।

खड़े हुए (बाएँ से दाएँ) श्री अभिजीत कुमार सिन्हा, सहायक लेखा अधिकारी, श्री विजय कान्त झा, वरीय लेखाकार, संपादक, श्रीराम पाण्डेय, सहायक लेखा अधिकारी, श्री चन्द्र मोहन मिश्रा, वरीय लेखाकार, श्री राजेन्द्र कुमार पर्यवेक्षक ।



सत्यमेव जयते

चेतना

विश्व हिन्दी साहित्य परिषद् (लेखा एवं हकदारी), बिहार, पटना ।
का कार्यालय, महालेखाकर भवन,
वीरचन्द्र पटेल मार्ग, पटना - 800001

विश्व हिन्दी साहित्य परिषद् (लेखा एवं हकदारी), बिहार, पटना ।
का कार्यालय, महालेखाकर भवन,
वीरचन्द्र पटेल मार्ग, पटना - 800001

विश्व हिन्दी साहित्य परिषद् (लेखा एवं हकदारी), बिहार, पटना ।
का कार्यालय, महालेखाकर भवन,
वीरचन्द्र पटेल मार्ग, पटना - 800001

त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका
चौबिसवाँ अंक

महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), बिहार, पटना ।
का कार्यालय, महालेखाकर भवन,
वीरचन्द्र पटेल मार्ग, पटना - 800001

चेतना के इस 24वें अंक में प्रकाशित सभी रचनायें लेखकों/रचनाकारों के अनुसार उनकी मौलिक एवं अप्रकाशित हैं तथा इसमें दिए गये विचार/मंतव्य उनके अपने हैं। इससे किसी प्रकार की सहमति/असहमति सम्पादक मण्डल की नहीं है।

स्वत्वाधिकार : महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), बिहार, पटना

प्रकाशन : 'चेतना'

प्रकाशक : महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), बिहार, पटना का
कार्यालय, महालेखाकार भवन,
वीरचन्द पटेल मार्ग, पटना-800001

अंक : 24वाँ

(सितम्बर 2013)

मुख्य पृष्ठ : भगवान बुद्ध की प्रतिमा

मूल्य : राजभाषा हिन्दी की अनवरत सेवा

मुद्रक : जी० बी० प्रिंटर्स
पोपुलर प्लेस
लंगरटोली चौराहा, पटना-4

चेतना परिवार

• संरक्षक •

श्री संजय कुमार

महालेखाकार (ले० एवं ह०), बिहार, पटना

• प्रकाशन परामर्शदातृ समिति •

श्री राम हित

वरिष्ठ उप महालेखाकार, बिहार, पटना

श्री मुकेश कुमार लाल

उप महालेखाकार, बिहार, पटना

श्री जॉर्ज सैमुअल

उप महालेखाकार, बिहार, पटना

• प्रधान सम्पादक •

मो० हाशिम अंसारी

व० लेखा अधिकारी, हिन्दी कक्ष

• सम्पादक •

श्री विजय कान्त झा

वरीय लेखाकार

• सहायक सम्पादक •

श्री अभिजीत कुमार सिन्हा

सहायक लेखा अधिकारी

• सहायक सम्पादक •

श्री श्रीराम पाण्डेय

सहायक लेखा अधिकारी

• सहायक सम्पादक •

श्री चन्द्र मोहन मिश्र

वरिष्ठ लेखाकार

• सहायक सम्पादक •

श्री राजेन्द्र कुमार

पर्यवेक्षक, हिन्दी कक्ष

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विषय	लेखक	पृष्ठ
1	चेतना परिवार		iv
2	अनुक्रमणिका		v
3	महालेखाकार का संदेश		vi
4	वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन) का संदेश		vii
5	उप महालेखाकार (लेखा एवं वी०एल०सी०) का संदेश		viii
6	उप महालेखाकार (पेंशन) का संदेश		ix
7	सम्पादकीय		1
8	महालेखाकार कार्यालय में हिन्दी रिपोर्ट, हिन्दी कक्ष की गतिविधियाँ (2012-13)		3
9	पुरस्कार वितरण (वर्ष-2012)		6
10.	परमात्मा	- श्री राजेन्द्र कुमार, पर्यवेक्षक (हिन्दी कक्ष)	7
11.	भिक्षुक	- श्री राजेन्द्र कुमार, पर्यवेक्षक (हिन्दी कक्ष)	8
12	भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक	- श्रीमति नीतू कुमारी (स०ले०अ०)	9
13	बुलेट मैन	- श्री अश्विन अनुगार (सुपुत्र-श्री प्रेम निवास मिश्र, स०ले०अ०)	14
14	उर्जा संरक्षण के लाभ	- श्री धीरज कुमार (एम०टी०एस०)	26
15	वैश्वीकरण के संदर्भ में लिंग विभेद तथा महिला सशक्तिकरण	- श्री धीरज कुमार (एम०टी०एस०)	28
16	प्यारी माँ	- सुश्री सुष्मिता सरकार (लेखाकार)	30
17	आकांक्षा	- सुश्री सुष्मिता सरकार (लेखाकार)	31
18	हैप्पीनेस मसाला	- सुश्री प्राची श्री (सुपुत्री नीतू कुमार) (स०ले०अ०)	34
19	जीवन	- श्री विजय प्रसाद (व०लेखा०)	36

20	सेवा निवृत	- श्री चंदन कुमार (लेखाकार)	39
21	मेरा सफर	- श्री संजय कुमार ओझा, लेखाकार, प्र०-I	45
22	प्यार की कीमत	- श्री संजय कुमार ओझा, लेखाकार, प्र०-I	47
23	तितली को मत पकड़ो	- श्री वैद्य (डॉ०) रामेश्वर राम सेवा निवृत वरीय लेखाकार	48
24	जिंदगी का कड़वा सच	- श्रीमति ज्योति देवी, एम०ए० (हिन्दी) प्रथम श्रेणी, पुत्री वैद्य (डॉ०) रामेश्वर राम सेवा निवृत वरीय लेखाकार	49
25	केदार का बचपन	- श्री हरे राम प्रधान, सेवा निवृत पर्यवेक्षक	50
26	जिन्दगी	- श्री शिव शंकर तिवारी, वरीय लेखाकार/लीगर सेल 10.06.2013	54
27	दिशा-ज्ञान	- श्री बनवारी सिंह, केयर टेकर, कल्याण अनुभाग	56
28	गुरु जी	- श्री बनवारी सिंह, केयर टेकर, कल्याण अनुभाग	57
58	यादें	- श्रीमती शिवाणी चन्द्रा कनिष्ठ हिंदी अनुवादक, हिंदी कक्ष	58
30	एक तिनका	- श्रीमती शिवाणी चन्द्र कनिष्ठ हिंदी अनुवादक, हिंदी कक्ष	59
31	मुनीम बाबा का पुरुषार्थ	- श्री अनन्त राम, व० लेखाकार	60

♦ ♦ ♦

महालेखाकार (ले० व ह०) बिहार, पटना का



संदेश

आज बहुत ही हर्ष एवं उल्लास का विषय है कि हिन्दी पखवारा के इस शुभ वेला में हमारा कार्यालय लगभग शत-प्रतिशत कार्य हिन्दी में संपन्न कर, मुख्यालय एवं राजभाषा विभाग के निर्देशानुसार हिन्दी में प्रचार-प्रसार के कार्य में सराहनीय सहयोग प्रदान कर रहा है। गृह पत्रिका 'चेतना' भी इस दिशा में बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिकाएँ निभा रही है। इस अंक में विभिन्न अधिकारियों व कर्मचारियों द्वारा हिन्दी के प्रति अपने समर्पण, प्रेम, आदर एवं सम्मान का परिचय कविताओं, लेखों एवं संस्मरणों के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है। मैं उनकी इस भावना एवं सतत् प्रयास हेतु सभी को धन्यवाद अर्पित करता हूँ तथा कामना करता हूँ कि हिन्दी के उत्थान में सभी कर्मचारियों/अधिकारियों का सतत् प्रयास अछुण्ण बना रहे।

शुभकामनाओं सहित।

संजय कुमार
महालेखाकार

वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन) बिहार, पटना का



संदेश

कार्यालीय हिन्दी पत्रिका 'चेतना' के 24वें अंक कर्मचारियों एवं संपादक मंडल के सहयोग से आपके समक्ष प्रस्तुत है। राजभाषा हिन्दी के उत्थान के लिए हम सब का दायित्व है कि सरकारी काम-काज तथा व्यक्तिगत पत्र-लेखन में हम हिन्दी भाषा का अधिकाधिक प्रयोग करें और अपरिहार्य परिस्थितियों में ही अंग्रेजी का प्रयोग करें।

हिन्दी भाव-सम्प्रेषण की सरल भाषा है। फलस्वरूप इसके माध्यम से पूरे राष्ट्र को एकता के सूत्र में बाँधा जा सकता है और इसीलिए भारत सरकार द्वारा राजभाषा हिन्दी को केन्द्रीय कार्यालयों एवं सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों/उपक्रमों में हिन्दी में कार्य करने की प्रतिबद्धता पर बल दिया गया है, जिसका सुखद परिणाम पूरे देश में परिलक्षित है।

कार्यालय के कर्मचारियों एवं अधिकारियों को मैं अपनी तरफ से शुभकामनायें व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने हिन्दी में कार्य कर शत-प्रतिशत लक्ष्य प्राप्त किया एवं कार्यालय का सम्मान बढ़ाया है।

धन्यवाद।

जय हिन्द! जय हिन्दी!

शुभकामनाओं सहित

राम हित

वरिष्ठ उप महालेखाकार
(प्रशासन)

उप महालेखाकार (लेखा एवं वी०एल०सी०) बिहार, पटना



संदेश

हिन्दी, हमारी राष्ट्रभाषा ही नहीं अपितु पूरे देश को एक सूत्र में बांधने का वह धागा व सुलभ साधन भी है, जो विभिन्न प्रान्तों को मोतियों की तरह आपस में पिरोकर एक सुन्दर माला बनाती है।

इस सन्दर्भ में निश्चित रूप से हमारी पत्रिका 'चेतना', गृह मंत्रालय (भारत सरकार) एवं मुख्यालय द्वारा जारी किए गये निर्देशों का पालन करते हुए लोगों में हिन्दी के प्रति जागृति प्रदान करती है। पत्रिका के माध्यम से राष्ट्रभाषा हिन्दी की प्रगति के लिए कार्यालय कर्मियों को हमारी शुभकामनायें।

शुभकामनाओं सहित

मुकेश कुमार लाल
उप महालेखाकार

उप महालेखाकार (पेंशन एवं निधि) बिहार, पटना का



संदेश

इस कार्यालय की हिन्दी पत्रिका 'चेतना' के चौबीसवें अंक के प्रकाशन से मुझे अतिशय प्रसन्नता हो रही है।

पत्रिका के प्रकाशन के लिए चेतना परिवार के सभी सदस्य एवं रचनाकार बधाई के पात्र हैं। उन्हें मेरी हार्दिक बधाई। आशा है, सरकारी कामकाज में हिन्दी को इससे प्रोत्साहन मिलेगा और हमलोग अपने दैनिक कार्यों में हिन्दी का अधिक-से-अधिक प्रयोग करके इसके विकास में अपना योगदान देंगे।

हिन्दी एक सरल राजभाषा है। सरकारी/गैर सरकारी अर्थात् सभी कार्यों, लेखन एवं वाचन में हिन्दी का कृत संकल्पित प्रयोग करें। आईए ! आज से ही, अभी से ही, इस पर अमल करें।

पत्रिका की अविरल प्रगति एवं अनवरत प्रकाशन के लिए मेरी हार्दिक मंगल कामनाएँ।

जय हिन्द, जय हिन्दी!

जॉर्ज सैमुअल
उप महालेखाकार
(पेंशन व निधि)



महालेखाकार (ले० एवं हक०) कार्यालय की पत्रिका “चेतना” 24वें अंक आप सुधी पाठको को साग्रह समर्पित करते हुए मुझे बहुत प्रशन्नता है। राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में अपनी योगदान हेतु यह पत्रिका कृत-संकल्पित है।

सरकारी कामकाज में राजभाषा हिन्दी के प्रति जागरूकता लाने तथा इसके प्रयोग में गति लाने के उद्देश्य से यह पत्रिका प्रकाशित की जाती रही है। पत्रिका के विकास के लिए हम सदैव प्रयत्नशील हैं। तीव्र गति एवं वेग से हो रहे तकनीकी विकास के कारण प्रतिदिन नये शब्दों का प्रचलन एवं प्रयोग किया जा रहा है। हिन्दी के विकास के लिए यह आवश्यक है कि हम विश्व के अन्य भाषाओं के साथ कदम-से-कदम मिलाकर चलना सीखें ताकि अन्तर्राष्ट्रीय पटल पर हमारी हिन्दी अपनी गरिमा एवं गौरव का स्थान पा सके।

वश आप सुधी पाठकों का सुझाव एवं मन्तव्य पूर्व की भांति मुझे मिलती रहे।

हिन्दी केवल एक भाषा ही नहीं अपितु यह एक भारतीय संस्कृति है जिसे हमारे मुनिषियों, ऋषियों ने प्रेम, त्याग, तपस्या स्नेह शांति, और शीतलता से इसे सिंचित कर इसके (हिन्दी) जड़ को अडिग और अक्षुण्ण बनाया है। आवश्यक है अब मात्र हिन्दी रूपी कल्पवृक्ष का सेवा करना एवं उससे मनोवांछित जीवनोपयोगी फल प्राप्त करना।

आज उत्तराखंड के केदारघाटी में महाविनाश का ताँडव स्वरूप नहीं होता यदि हमलोग पर्यावरण/प्रकृति का छद्म विकाश के नाम पर दोहन/अतिक्रमण नहीं करते। अर्थात् प्राकृतिक संतुलन से छेड़छाड़ नहीं करते। ये सब सावधानियाँ उक्त हिन्दी रूपी कल्पवृक्ष में उल्लेखित हैं।

हिन्दी भाषा सम्प्रेषण की सबसे सरल और सुन्दर माध्यम है। मानवता की सेवा, अर्थात् बहुजन हिताय बहुजन सुखाय, का एक मात्र रास्ता हिन्दी ही है

क्योंकि निरक्षर अर्थात् बिना लिखे-पढ़े व्यक्ति भी हिन्दी अच्छी तरह बोलते हैं और बहुत अच्छी तरह समझते भी हैं ऐसी स्थिति में मानव सेवा अर्थात् गरीबी उन्मूलन आत्मनिर्भरता, शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि वाणिज्यिकी इत्यादि क्षेत्रों के बहुमुखी विकास के रास्ते, हिन्दी के अलावा अन्य भाषा हो ही नहीं सकता।

पूर्व के वर्षों में लेखा एवं हकदारी तथा लेखा परीक्षा कार्यालयों ने संयुक्त रूप से हिन्दी पखवारा व 14 सितंबर 2012 को हिन्दी दिवस मनाया जिसमें विभिन्न प्रतियोगिताएँ यथा निबंध प्रतियोगिता, अनुवाद प्रतियोगिता बच्चों के काव्यपाठ इत्यादि आयोजित किए गये। उक्त उत्सव में दोनों महालेखाकार महोदय (लेखा परीक्षा एवं ले० एवं हकदारी) उपमहालेखाकार महोदय एवं कार्यालय के सभी अधिकारी/कर्मचारियों ने हर्षोल्लास के साथ हिस्सा लिया एवं इसे सफल बनाया इसके लिए मैं उन्हें धन्यवाद और कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ।

अतः आइये, आज 'हिन्दी दिवस' के शुभ अवसर पर हम सभी यह संकल्प लें कि हम अपना सारा सरकारी कार्य राजभाषा हिन्दी में ही करेंगे। साथ ही यह भी संकल्प लें कि हिन्दी के व्यापक प्रचार-प्रसार हेतु मार्ग में आने वाली समस्त कठिनाईयों को दूर करने पर गंभीरता से सोचें।

इस अंक को मूर्तरूप में आपके बीच लाने में श्री अभिजीत सिन्हा, सहायक लेखा अधिकारी सामान्य प्रशासन अनुभाग का बहुमूल्य योगदान रहा है। इसके लिए वे बधाई के पात्र हैं। हमारे संरक्षक श्री संजय कुमार महालेखाकार (ले० वं ह०) के मार्गदर्शन एवं परामर्श को भुलाया नहीं जा सकता, जिसके फलस्वरूप हम अपने कार्य में सक्षम हो सके। उन्हें मैं कोटि-कोटि धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ।

यह पत्रिका आप सुधी पाठकों की ही पत्रिका है। हमें आपके सुझाव की चिर प्रतीक्षा रहेगी। हम आपकी सहभागिता के लिए अनुगृहित रहेंगे।

जय हिन्द ! जय हिन्दी !

विजयकान्त झा
संपादक

कार्यालय, महालेखाकार (ले० व ह०), बिहार, पटना में हिन्दी गतिविधियाँ-2012-13

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के द्वारा सरकारी काम काज में हिन्दी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए हर वर्ष एक वार्षिक कार्यक्रम जारी किया जाता है जिसमें हिन्दी के प्रयोग के लक्ष्य निर्धारित किये जाते हैं तथा इन्हीं लक्ष्यों को प्राप्त करने हेतु विभिन्न कार्यालयों से अपेक्षा की जाती है। इस वर्ष महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), बिहार, पटना के कार्यालय ने अपेक्षित लक्ष्यों को प्राप्त करने में जो प्रगति की है, उसका विवरण निम्नलिखित है :-

1. राजभाषा अधिनियम 3(3) का अनुपालन -

राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3) के अन्तर्गत कुल 2702 दस्तावेज जारी किये गये, जिनमें हिन्दी में 2702 तथा अंग्रेजी में 0 थे।

2 हिन्दी पत्राचार :

वर्ष 2012-13 के दौरान इस कार्यालय में हिन्दी में प्राप्त कुल पत्रों की संख्या 143483 थी, जिनमें से 96843 के उत्तर हिन्दी में भेजे गये। शेष पत्रों के उत्तर अपेक्षित नहीं थे। कार्यालय द्वारा भेजे गए कुल पत्रों की संख्या 97394 थी। कुल भेजे गये पत्रों में से हिन्दी पत्रों की प्रतिशतता 99.43 थी।

3 राजभाषा कार्यान्वयन समिति

उक्त वर्ष में रा०भा०का०स० की नियमित तिमाही बैठकें सम्पन्न हुई। नियमतः वर्ष के दौरान 4 बैठकें आयोजित की गई, जिनमें राजभाषा के कार्यक्रम एवं नीतियों के क्रियान्वयन पर विचार-विमर्श कर अधिकांश निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति की गई।

4 हिन्दी कार्यशाला:

इस वर्ष इस कार्यालय में 8 हिन्दी कार्यशालाएँ चलाई गईं जिनमें कार्यालय के 49 अधिकारियों/कर्मचारियों को प्रशिक्षित किया गया ।

5 हिन्दी पुरस्कार योजना:

वर्ष 2012 में इस कार्यालय के 06 अधिकारियों/कर्मचारियों को हिन्दी पुरस्कार योजना के अन्तर्गत हिन्दी पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया । यह पुरस्कार 'हिन्दी दिवस' के पावन अवसर पर प्रदान किया गया ।

6 हिन्दी पखवारा समारोह का आयोजन

इस कार्यालय में वर्ष 2011 के दौरान 01 सितम्बर, 2012 से 14 सितम्बर 2012 तक हिन्दी पखवारा समारोह का वृहत आयोजन किया गया। पखवारा के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताएँ यथा-हिन्दी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता, संक्षेपण एवं प्रारूप लेखन प्रतियोगिता, हिन्दी अनुवाद प्रतियोगिता तथा कम्प्यूटर पर हिन्दी टंकण प्रतियोगिता इत्यादि आयोजित की गयी । विभिन्न प्रतियोगिताओं में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले प्रतियोगियों को 'हिन्दी दिवस' के उपलक्ष्य में पारितोषिक प्रदान कर सम्मानित किया गया ।

7 नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति:

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों में भाग लेने हेतु जब भी आमंत्रित किया गया, इस कार्यालय ने भाग लेकर राजभाषा कार्यक्रम एवं नीतियों के कार्यान्वयन की समीक्षा में अपने विचार व्यक्त किये । इस कार्यालय ने राजभाषा में वार्षिक कार्यक्रम के अधिकांश लक्ष्यों की पूर्ति की सूचना समिति को दी ।

8 हिन्दी शिक्षण योजना:

इस कार्यालय में अधिकारियों/कर्मचारियों के राजभाषा हिन्दी के ज्ञान की स्थिति बहुत अच्छी है। यहाँ 103 अधिकारी एवं 415 कर्मचारी हैं जिन्हें हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त है। यहाँ सभी हिन्दी में ही कार्यालय का कामकाज करते हैं। यहाँ 15 टंकण हैं जिनमें सभी हिन्दी में प्रशिक्षित हैं।

9. हिन्दी पुस्तकों की खरीद:

इस कार्यालय में 2012-13 के दौरान पुस्तकों के क्रय पर कुल 39580 रु व्यय किया गया जिसमें से हिन्दी पुस्तकों की खरीद पर 20,000 रुपये व्यय किया गया।

10. हिन्दी टिप्पण:

इस कार्यालय में लगभग शत प्रतिशत हिन्दी में टिप्पण एवं प्रारूप लेखन किया जाता है। वर्ष 2012-13 के दौरान इस कार्यालय में कुल 70323 फाइलें, खोली गई जिनमें 69810 फाइलों में हिन्दी में टिप्पणियाँ लिखी गई।

इस प्रकार इस कार्यालय ने कुछ लक्ष्यों को छोड़कर वार्षिक कार्यक्रम के अधिनियम लक्ष्यों को प्राप्त कर लिया है। अतः राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठकों में वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति के लिए समीक्षा की जाती रही है। आशा है, आगामी वर्षों में शत-प्रतिशत लक्ष्यों की पूर्ति की जा सके।

पुरस्कार वितरण (वर्ष-2012)

हिन्दी पखवारा के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा अति उत्साह से भाग लिया गया, जिसमें सर्वश्रेष्ठ प्रतिभागियों को पुरस्कार प्रदान किया गया, जिनका विवरण निम्न प्रकार है :-

क्रम सं०	कार्यक्रम	श्रेणी	प्रतिभागियों का नाम
1	हिन्दी टिप्पण एवं प्रारूप लेखन	प्रथम द्वितीय तृतीय	यतीश चन्द्र वर्मा, (स०ले०अधि०) राजू कुमार सिंह, (स०ले०प०अधि०) अशोक कुमार, (लेखापरीक्षक)
2	निबंध प्रतियोगिता	प्रथम द्वितीय तृतीय	आशीष कुमार (लेखाकार) प्रीतेश सौरभ (स०ले०प०अधिकारी) नीरज कुमार सिंह (लेखापरीक्षक)
3	बच्चों का काव्य पाठ	प्रथम द्वितीय तृतीय	भार्गवी पटेल, द्वारा श्री मनोज कुमार (स०ले०प०अधिकारी) एवं मनीषा कुमारी द्वारा श्री राम सेवक पासवान (लेखापरीक्षक) श्लोक, द्वारा श्री सुनिल शंकर चौधरी (व०ले०प०अधिकारी) जूली कुमारी, द्वारा वेद प्रकाश एवं आकरीन परवीन, द्वारा श्री अब्दुल रहमान खान।
4	कम्प्यूटर पर हिन्दी टंकण प्रतियोगिता	प्रथम द्वितीय तृतीय	राजीव कुमार (स०ले०प०अधिकारी) मो० मेजारुद्दीन (लेखाकार) पंकज कुमार अकेला (डी०ई०ओ०)
5	स्वरचित काव्य पाठ प्रतियोगिता	प्रथम द्वितीय तृतीय	मनोज कुमार (ले०प०अधिकारी) सुश्री सुशिमता सरकार (लेखाकार) राजेन्द्र कुमार (पर्यवेक्षक)
6	हिन्दी अनुवाद प्रतियागिता	प्रथम द्वितीय तृतीय	मनोज कुमार न०-5 (स०ले०प०अधिकारी) अशोक कुमार (लेखापरीक्षक) यतीश चन्द्र वर्मा, (स०ले०अधिकारी)

“परमात्मा”

श्री राजेन्द्र कुमार
पर्यवेक्षक (हिन्दी कक्ष)

जीवन के निर्माण में तुम हो,
जीवन के अरमान में तुम हो,
धरती के हर जीव में तुम हो,
जीवों के हर श्रोत में तुम हो,
प्रकृति के हर रूप में तुम हो।
नर-नारी के रूप में तुम हो,
दिनकर की किरणों में तुम हो,
नयनों की ज्योति में तुम हो,
तरु वृक्ष, हरियाली तुम हो,
चिड़ियों के कलरव में तुम हो
शब्दों के अर्थों में तुम हो,
कलमों की लेखों में तूम हो,
बाद्यंत्र सप्तस्वर में तुम हो,
गीतों के छंदों में तुम हो,
श्रृष्टि के रचनाकार तुम्ही हो,
ईश्वर के हर रूप में तुम हो,
जीवन के नस-नस में तुम हो,
जहाँ देखा, तुम ही तुम हो,

जीवन के निर्वाण भी तुम।
जीवन के वरदान में भी तुम।
धरा की हर कण-कण भी तुम।
जीवन के हर श्रण भी तुम।
उसके हर प्रतिरूप भी तुम।
किरणों की चंचलता भी तुम।
नयनों के सौन्दर्य भी तुम।
तरु वृक्ष छाया भी तुम,
बच्चों की किलकारियाँ भी तुम।
शब्दों के हर भाव भी तुम।
लेखों के सन्दर्भ भी तुम।
उसके हर गुंजन भी तुम।
गीतों के हर भाव भी तुम।
स्थावर, जंगम भी तुम।
परमात्मन् के रूप भी तुम।
जीवन के रग रग में तुम।
नहीं कहाँ बता दो तुम ?

भिक्षुक

श्री राजेन्द्र कुमार
पर्यवेक्षक (हिन्दी कक्ष)

भीखमंगे तुम हो दूत बने,
लिए कटोर, खड़े मूर्त बने।
ईश्वर का संदेश लिए तू,
मांगता-फिरता है घर-घर तू।
अमृत पीकर तू जीता है,
भूखा-प्यासा तू सोता है,
दिखाता ईश्वर रोटी में,
परमेश्वर दिखता मोटी में।
मनुज के साथी तुम बने हो,
तेरा साथ है मनुज।
तेरे भीतर ईश बसे हैं,
ईश के भीतर तुम।
हर जीव की जीवन चर्चा,
देती संदेश है हर चेतन को।
धैर्य सीखना है तो सीखो,
भीखमंगे की जीवनचर्या से।
एक रोटी के लिए वह,
दिन भर बैठा रहता है।
हाथ पसारता है जग को,
पर मुख से कुछ नहीं कहता है।
शुभ संदेश दे जाता है,
भले को रास्ता दिखलाता है।
जीवन में मिहनत न करोगे,
भीख मांगते नजर आओगे।
ढूँढ़ता तुझे सब मंदिर-मस्जिद में,
पर मिलता तू नम मंदिर में।

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक



श्रीमति नीतु कुमारी
(स०ले०अ०)

कार्यपालिका, न्यायपालिका, विधायिका तथा स्वतंत्र लेखापरीक्षा हमारे लोकतंत्रिय संविधान की महत्वपूर्ण आधारशिलाएँ हैं। कार्यपालिका के वित्तीय आदान-प्रदान का उचित अथवा अनुचित प्रयोग निश्चित करना एक तनीकी कार्य है जिसके निर्वहन के लिए विशेष योग्यता प्राप्त होना आवश्यक है। इसकी पूर्ति नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक के नियुक्ति द्वारा होती है। वह भारत की संपरीक्षा और लेखा प्रणालियों का निष्पक्ष प्रधान होता है। वह अपने कर्तव्यों का निर्वहन उचित रूप से कर सके, इसलिए उसका पद कार्यपालिका के नियंत्रण में नहीं रहना चाहिए।

पद एवं स्थिति

संविधान निर्माताओं ने नियंत्रक तथा महालेखापरीक्षक को संविधान में एक अतिविशिष्ट एवं प्रमुख स्थान दिया है। सन् 1919 से भारत में महालेखापरीक्षक का पद विद्यमान है। संविधान में नियंत्रक-महालेखापरीक्षक का पद भारत शासन अधिनियम 1935 के अधीन महालेखापरीक्षक के नमूने पर ही बनाया गया है।

नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का पद इंग्लैण्ड तथा अमेरिका में इससे भी लगभग 100 वर्ष पुराना है। ब्रिटेन की प्रणाली में लेखा विभिन्न विभागों द्वारा तैयार किये जाते हैं, नियंत्रक - महालेखापरीक्षक द्वारा नहीं। भारत के नियंत्रक-महालेखापरीक्षा से लेखा तैयार करने के कृत्य को पृथक करने के लिए

विधान बनाकर इस पद को पदधारी के समकक्ष बना दिया गया है। किन्तु अभी भी एक महत्वपूर्ण बात में अन्तर बना हुआ है। उसके पदनाम से यह दर्शित होता है कि उसे नियंत्रक एवं लेखापरीक्षक दोनों के कार्य करने हैं, किन्तु भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक केवल लेखापरीक्षक का ही कर्तव्य कर रहा है। नियंत्रक का नहीं। नियंत्रक के कृत्यों का प्रयोग करते हुए इंग्लैंड का नियंत्रक-महालेखापरीक्षक लोकधन की प्राप्ति और उसके निर्गम का भी नियंत्रण करता है।

भारतीय संविधान के अंतर्गत नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक को भारत के सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश के समान पद स्थिति तथा वेतनमान की सुविधा प्राप्त है और उसको कार्यकाल के दौरान मात्र महाभियोग द्वारा ही हटाया जा सकता है।

जहाँ तक सम्भव हो वहाँ तक भारत के नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक को बाह्य शक्तियों एवं दबावों से मुक्त रखा जाता है। इसे स्थायित्व एवं पदावधि की सुरक्षाकी व्यवस्था प्राप्त है। अपने कर्तव्य के निर्वाह में उसका राष्ट्र के सर्वोच्च तक से मतभेद हो सकता है। इसी के फलीभूत उसे सेवानिवृत्ति के उपरान्त किसी भी लाभ के पद पर पुनर्नियुक्त नहीं किया जा सकता।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि:-

स्वतंत्र निकाय के रूप में लेखापरीक्षा विभाग की स्थापना वर्ष 1919 के अधिनियम के साथ हुई, परन्तु इसकी रचना सन् 1853 में हो चुकी थी। महालेखा परीक्षक की नियुक्ति 'भारत सचिव' द्वारा की जाती थी और सम्राट के प्रसाद स्वरूप वह अपने पद पर कार्य करता था, परन्तु शासन अधिनियम 1935 के अधीन उसकी नियुक्ति सम्राट द्वारा की जाने लगी तथा उसके कार्य के शैलियों व शर्तों का निर्धारण, परिषद् सहित सम्राट द्वारा किया जाने लगा।

सन् 1947 में देशी रियासतों का भारतीय संघ में शामिल होने से महालेखा परीक्षक की पद-गरिमा देश व्यापी सिद्ध हुई। सन् 1950 के संविधान में

महालेखा परीक्षक के पदनाम में 'नियंत्रक' शब्द लगाया गया तथा उसे सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश के समान संवैधानिक अधिकारी बनाया गया।

सन् 1953 में भारतीय संसद में भारत के नियंत्रक तथा महालेखा परीक्षक के कार्यकाल तथा सेवा की शर्तों के निर्धारण हेतु एक्ट बनाया गया। 1973 तक भारत के नियंत्रक व महालेखा परीक्षक के केन्द्रीय और राज्य की सरकार की दोनों के ही लेखा परीक्षण तथा सभी वित्तीय लेन-देन के लेखे सम्मिलित थे। सन् 1976 के उपरान्त लेखांकन सम्बन्धी दायित्व से उसे मुक्त कर दिया गया। भारत के नियंत्रक तथा महालेखापरीक्षक का प्रमुख कार्य लेखा परीक्षण ही रखा गया।

नियुक्ति एवं स्वतंत्रता:-

सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश की नियुक्ति प्रक्रिया के समान ही भारत के नियंत्रक तथा महालेखा परीक्षक की नियुक्ति अनुच्छेद 148 के अनुसार- राष्ट्रपति के हस्ताक्षर एवं मुद्र सहित अधिपत्र द्वारा की जाती है। वेतन तथा सेवा की शर्तें संसद द्वारा नियमित होती हैं और उसकी पदावधि के दौरान उनमें अलाभकारी परिवर्तन नहीं किया जा सकता। कार्यभार को क्रियान्वित करने से पूर्व उसे विधि अनुसार राष्ट्रपति के समक्ष निष्ठा प्रतिज्ञा ग्रहण करनी पड़ती है। 1976 में यथा संशोधित अनियनियम में यह उपबंध है कि नियंत्रक महालेखा परीक्षक की पदावधि उसके पद ग्रहण करने की तारीख से छह वर्ष होगी, किन्तु 65 वर्ष की आयु प्राप्त कर लेने पर छह वर्ष की अवधि की समाप्ति के पूर्व पद रिक्त हो जाएगा। वह किसी भी समय राष्ट्रपति को संबोधित अपने हस्ताक्षर सहित लेख द्वारा पद त्याग सकता है। उसके महाभियोग द्वारा भी हटाया जा सकता है। नियंत्रक-महा-लेखापरीक्षक और उसका कर्मचारिवृन्द के वेतन और प्रशासनिक व्यय भारत की संचित निधि पर भारित होता है।

कर्तव्य एवं शक्तियाँ -

नियंत्रक-महालेखापरीक्षक संघ एवं राज्यों के लेखाओं के संबंध में ऐसे कर्तव्यों का पालन और ऐसी शक्तियों का प्रयोग करेगा जो संसद द्वारा विहित

किए जाएं। इस शक्ति के प्रयोग में संसद में नियंत्रक-महालेखापरीक्षक (कर्तव्य, शक्तियाँ एवं सेवा की शर्तें) अधिनियम- 1971 अधिनियमित किया है। सन् 1976 में संशोधित इस अधिनियम द्वारा उसे संघ के लेखाओं को संकलित करने के संविधान के पूर्व के कर्तव्य से मुक्ति मिल गई है। राज्य भी इसी प्रकार के पूर्व अनुमोदन से विधान बना सकते हैं और राज्य स्तर पर लेखाओं को संपरीक्षा से अलग कर सकते हैं तथा नियंत्रक- महालेखा परीक्षक को लेखा तैयार करने के विषय में राज्य एवं संघ दोनों के स्तर पर मुक्ति दे सकते हैं। लेखापरीक्षण के सम्बन्ध में नियंत्रक - महालेखा परीक्षक के प्रमुख कर्तव्य निम्नलिखित हैं:-

(क) वह समस्त सरकारी व्यय का लेखा परीक्षण इस उद्देश्य से करता है कि उपयोग में ला जा रहा समस्त धन कानूनी रूप से उन सेवाओं तथा प्रयोजनों के लिए उपलब्ध था, जिनके लिए इसका उपयोग किया गया है और इस व्यय की समुचित स्वीकृति पहले से ही ले ली गई थी।

(ख) वह ऋण, खाता, विशेष धन राशि आदि से सम्बन्ध रखने वाले केन्द्र एवं राज्यों के सभी लेन-देनों की लेखापरीक्षा करता है।

(ग) किसी भी सरकारी विभाग के भण्डार के सामान आदि का परीक्षण सत्ता अनुरोध पर कर सकता है।

(घ) किसी भी सरकारी विभाग की आय की जाँच, केन्द्रीय अथवा राज्य सरकार के अनुरोध पर करता है।

(ङ) वह अपने विवेक- अथवा सरकार के अनुरोध पर किसी भी स्थानीय संस्था आदि के लेखा-परीक्षण जैसे अतिरिक्त कार्य भी कर सकता है।

(च) वह संघ-राज्य एवं संघ राज्य क्षेत्र की संचित निधि से हुए सभी व्यय की लेखा परीक्षा करता है।

(छ) वह संघ और राज्यों की आकस्मिकता निधि और लोक लेखाओं से हुए सभी व्यय की लेखा परीक्षा करता है।

भारत का नियंत्रक तथा महालेखापरीक्षक अपना महत्वपूर्ण कार्य अपने अधिनस्थ विभिन्न विभागों के अधिकारियों के द्वारा सम्पन्न करता है।

नियंत्रक-महालेखापरीक्षक की रिपोर्ट:-

भारत का नियंत्रक महालेखापरीक्षक अपनी रिपोर्ट संविधान के अनुच्छेद 151 के अनुसार राष्ट्रपति के समक्ष प्रस्तुत करता है तथा राष्ट्रपति रिपोर्ट को संसद के समक्ष रखवाता है। किसी भी राज्य के लेखा सम्बन्धी प्रतिवेदनों को उस राज्य के राज्यपाल के समक्ष प्रस्तुत करता है तथा राज्यपाल राज्य के विधानमंडल के समक्ष प्रस्तुत करवाता है।

महालेखापरीक्षक का रिपोर्ट महत्वपूर्ण वित्तीय अनियमितताओं को प्रकाश में लाता है। भारत के नियंत्रक-महालेखापरीक्षक ने अनेकों बार बुद्धिमतापूर्ण व्यय करने, कार्य विधियों में सुधार, संगठन तथा नियमों में परिवर्तन से सम्बद्ध महत्वपूर्ण प्रश्न उठाये हैं।

बोफोर्स तोप सौदे, 2-जी स्पेक्ट्रम निलामी, कोल माईन्स के आवंटन आदि से संबंधित नियंत्रक-महालेखापरीक्षक की रिपोर्ट ने भारतीय राजनीति को चुनौती दी है।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि नियंत्रक- महालेखापरीक्षक को भारतीय संविधान में एक प्रहरी की भूमिका दी गयी है। नियंत्रक- महालेखापरीक्षक का कार्य अतिमहत्वपूर्ण है। सरकारी धन जनता की धरोहर है। उसकी समुचित अभिरक्षा आवश्यक है। जवाहरलाल नेहरू जी के शब्दों में- “संसद में नियंत्रक- महालेखापरीक्षक की आलोचना करने का मतलब होगा कि संविधान के तहत उनकी स्थिति कमजोर करना।”



श्री अश्विन अनुगार
(सुपुत्र-श्री प्रेम निवास मिश्र,
स०ले०अ०)

अगर सच कहूँ श्रीमान्, तो बुलेट भईया का असली नाम शायद ही कोई जानता हो और जाने भी कैसे, आखिर बुलेट भईया हमसे जितने घुले मिले थे, उतना आपसे या आपके किसी अन्य मित्र से थोड़े ही पर चलिए, अब जब बात छिड़ गई हो तो बता ही देते हैं-बुलेट मैन उर्फ 'बुलेट भईया' का असली नाम, कभी किसी जमाने में, बुलटेश्वर प्रसाद हुआ करता था। इस बुलेट भईया के बाबूजी-'स्व० रामसेवक प्रसाद', गिरधारी भईया की नुक्कड़ पर स्थित 'खैनी शॉप' के बगल वाले मन्दिर में प्रभु श्री राम के सेवक के रूप में कार्यरत थे तो हुआ यूँ कि बुलेट भईया बुलेट की गति से, नौ की जगह छः महीने में ही प्रकट हो गए, जिससे अत्याधिक प्रभावित हो उनके बाबूजी ने उनका नाम बुलटेश्वर प्रसाद रख दिया।

बुलेट भईया शुरू से ही क्रान्तिकारी विचारधारा के धनी रहे। हालांकि इस तथ्य का खुलासा होने में कुछ विलम्ब अवश्यक हुआ। यह बात उन दिनों की है जब हम अपने गाँव स्थित पैतृक निवास स्थान पर विद्यार्थी का जीवन व्यतीत कर रहे थे। घर पर अकेले रहकर परीक्षाओं की तैयारी में जुटे रहते थे। एक सवेरे शौच आदि से निवृत्त होकर अपने घर के पिछवाड़े चापाकल पर बैठे कुल्ला कर रहे थे कि तभी उधर से भगवा धोती-कुर्ता पहने, कन्धे पर लाल कपड़े का झोला लटाकए और गले में रुद्राक्ष की माला पहने हमारे बुलेट भईया पधारे। उन्हें देखते ही हम

उनके चरणों में दण्डवत हो लिए, सोचा कोई बहुत बड़े महात्मा हैं जिनकी कृपा से कहीं हमारे भाग्य के बन्द ताले खुल जाएँ। अब हमें क्या मालूम था कि बुलेट भईया की प्रतीक्षा तो ग्यारह जिलों की पुलिस कर रही है।

खैर, हमें तो सिखाया गया था कि 'जात न पूछो साधू की, पूछ लीजिए ज्ञान', अतः बिना किसी जाँच पड़ताल के हमने उन्हें अपनी बाहर वाली कोठरी में आदरपूर्वक ठहराया और लगे उनकी सेवा सत्कार करने। हम तो यही समझते थे कि 'साधु तो चलता भला' लेकिन यहाँ तो परिस्थिति विपरीत मालूम हो रही थी। एक तो पहले ही कुछ रुखा सूखा खाकर गुजारा कर रहे थे, अब तो महात्मा जी भी गले पड़ गए। कंगाली में गीला हुआ आटा भी हाथ से जाता रहा। बस इसी प्रकार कुछ दिन बीते। महात्मा जी के कारण हम रात-दिन बेचैन रहने लगे। उनसे पीछा छूड़ाने का दूर-दूर तक कोई उपाय नहीं मालूम होता था। एक दिन ब्रह्म मुहूर्त में शौच के अवश्यमभावी प्रभाव से हमारी निद्रा भंग हुई। कुछ देर बिस्तर से व्याकुलतावश करवटें बदलने के बाद हम अंततः उठे और जलपात्र में जल भरकर घर के पिछवाड़े खेत में चले गये। रास्ते में महात्मा जी की कोठरी पड़ती थी। सहसा हम ठिठक गए। महात्मा जी की कोठरी से लगी खिड़की के नीचे शराब की दो खाली बोतलें पड़ी थी। इच्छा हुई कि अन्दर के गार्ड को जगाया जाए, ढोंगी महात्माकी पोल खोली जाए, परन्तु हमारी विवशता ही कुछ ऐसी थी कि हमारे कदम बड़े ही कालबद्ध तरीके से खेतों की ओर बढ़ते चले गए। लौटते वक्त हमने पाया कि बोतलें अपनी जगह से नदारद थी। अभी हम हक्के-बक्के भोर की हल्की रोशनी में बोतलों को खोज ही रहे थे कि अचानक कान में आवाज आई, "क्या ढूँढ़ रहे हो बच्चा।" इतना सुनते ही हमारे तो पसीने छूट गए। यूँ कहिए जनाब कि सिट्टी-पिट्टी गुम हो गई। हमें डर इस बात का था कि कहीं सचमुच के महात्मा से पंगा हो गया तो हमें श्राप-वाप न दे बैठे। फिर भी हिम्मत करके बोले, "आज बड़े सेवेरे जग गए बाबाजी" इस पर महात्मा जी बोले "हाँ, वे हम टहलने गए थे।" बात को आगे न बढ़ाते हुए हमने स्वीकृति में सिर हिलाया और

राम-राम कहते हुए अपने कमरे की ओर चुपचाप चल दिए। यह पहला मौका था जब हमारी शक की सूई बाबाजी पर जाकर रुकी।

एक दोपहर डाकिया हमारी लोक सेवा परीक्षा का एडमिट कार्ड लेकर आया। अभी हम दस्तखत करके उसे विदा करते, इससे पहले ही उसकी नजर बरामदे में बैठे बुलेट भईया पर पड़ी और वह उनके चरणों में नतमस्तक हो गया। कहने लगा “महात्मा जी, आप तो अंतर्दामी हैं। मेरी समस्या का समाधान करें। मेरी पत्नी की तबियत बहुत खराब रहती है। उसके हाथ-पैर, आँखें पीले पड़ते जा रहे हैं। कुछ उपाय बताइये।” इस पर बुलेट भईया बड़े ही हास्यपूर्ण लहजे में हाथ उठाकर बोले “शान्त बच्चा शान्त! हमारे पास हर समस्या का समाधान है। तुम्हारी पत्नी को जो रोग है, उसके निवारण के लिए प्रत्येक सोमवार को सेवेर जल्दी उठकर, नहा-धोकर शिवजी का जलाभिषेक करना और एक औषधि का नाम हम लिख कर देते हैं, उसे बाजार से लाकर सुबह-शाम दो चम्मच देना। इससे राहु के ग्रह कटेंगे। और तुम्हारी पत्नी पूर्णतः स्वस्थ हो जाएगी।” हम मन ही मन मुस्कुराते हुए बोले, ‘अब लो, यहाँ तो बाबाजी प्रेस्क्रिप्शन भी देने लगे।’ किन्तु बाबाजी के शब्द सुनते ही वह डाकिया प्रफुल्लित हो उठा और बाबाजी का जयकारा लगाते हुए बोला, “मैं धन्य हो गया महात्मा जी। आपने तो मेरी दुविधा ही दूर कर दी। मुझे पूरा विश्वास है कि मेरी पत्नी अब अवश्य ठीक हो जाएगी। जय हो! जय हो! लेकिन महात्मा जी यह तो बताएँ कि आप कहाँ से हैं और इधर कैसे पधारे।” अब मौका मिलते ही बुलेट भईया अपनी औकात पर आ गए। बड़े ही स्वाभाविक ढंग से उन्होंने अपने झोले में से एक देसी कट्टा निकाला और सामने चारपाई पर रख दिया। यह देखते ही हमने दाँतों तले उँगली दबा ली। डाकिया बेचारे की तो हवा ही निकल गई। बेचारा पसीना-पसीना हुआ जा रहा था कि तभी बुलेट भईया ने उसकी समस्याओं को सुलझाते हुए कहा, “डरो नहीं बालक। इसे पिस्तौल कहते हैं और हमें बुलेट बाबा। हम हिमालय की कन्दराओं में तपस्या कर रहे थे, तभी हमें ज्ञात हुआ कि यहाँ से करीब दो-सौ कोस पश्चिम में यमुना

के तटपर जो घना जंगल है, वहाँ एक अति भयंकर डाकू का आंतक व्याप्त है। प्रभु की आज्ञा से हम उस डाकू को परिवर्तित करने उस घने वन की ओर चल दिए। हमें देखते ही उसने हम पर इसी पिस्तौल से गोली चलाई। गोली हमें दाएँ बाँह में लगी,” महात्मा जी ने अपने दाएँ हाथ पर चोट के एक छोटे से निशान की आरे इशारा करते हुए कहा, “परन्तु वह प्रभु की हम पर असीम कृपा थी कि हमें कुछ भी नहीं हुआ। हमने अपने कमण्डल में से भभूत लेकर उस डाकू पर छिड़का और वह पूर्ण रूप से परिवर्तित हो गया। उसने हमें प्रणाम किया और स्वयं को समर्पित कर दिया। उपहार-स्वरूप उसने हमें यह पिस्तौल दी और हम हिमालय की ओर बढ़ ही रहे थे कि तभी रास्ते में यह गाँव पड़ा। सोचा कि थोड़ा रुककर विश्राम कर लें।”

यह सुनते ही डाकिया अपनी जेब टटोलने लगा। जेब में से एक सौ एक रुपए निकालकर बुलेट भईया के चरणों में रखते हुए बोला, “महाराज अपनी हैसियत के हिसाब से मैं इससे अधिक दक्षिणा तो नहीं दे सकता, परन्तु इतना अवश्य कहूँगा कि आज आपके दर्शन पाकर मैं धन्य हो गया। जय हो! जय हो!”, कहता हुआ वह अपनी साईकिल पर सवार हो वहाँ से चला गया। यह सब तमाशा देख कर हम दंग थे। भीतर ही भीतर हमारा शक और गहराता जा रहा था। हमें यह आभास हो चला था कि जिसे हम बहुत बड़े संत-महात्मा समझ रहे थे, वह निश्चित ही कोई चोर-उच्चका अथवा ठग है जो इन भोले भाले गाँव वालों को वेवकूफ बनाने के उद्देश्य से वहाँ आया है। लेकिन बुलेट भईया का देसी कट्टा देख हमें किसी भी प्रकार से उनके विरुद्ध जाने का साहस नहीं हुआ। तत्काल हमने, अपने काम से काम रखना ही उचित समझा।

अगले दिन सवेरे, हमारे दरवाजे के सामने का दृष्य अविश्वसनीय था। लगभग पैंतीस चालीस लोग, आस पास के गाँवों से टायर बैल पर सवार हो वहाँ आ पहुँचे थे। किसी के हाथ में केले का गुच्छ था, किसी के हाथ में फलों की टोकरी, कोई बुलेट भईया के गले में फूलों का हार डाल रहा था तो कोई बाबा के

नाम जयकारा लगा रहा था। बरामदे में चारपाई पर बैठे बाबाजी को ये सभी लोग चारों तरफ से घेरकर बैठे थे। इतने सारे भक्तों को देखकर बाबाजी फूले न समा रहे थे। कभी अपने देसी कट्टे को दिखाते हुए उसकी कहानी सुनाते तो कभी कुर्ते की दाई बाँह उठाकर गोली का निशान दिखाते। बीच बीच में एकाध बार प्रवचन की अविरल सरिता बहा देते। यह सब देखकर भक्त गद्गद् हुए जा रहे थे। यह नौटंकी देखकर हम मन ही मन कुढ़ते जा रहे थे।

इसी प्रकार दिनभर भक्तों की भीड़ बढ़ती ही गई। अगले एक हफ्ते तक यह सिलसिला जारी रहा। दिनभर भक्तों का ताँता लगा रहता और शाम को बाबाजी अपना देसी कट्टा सिरहाने रख विश्राम करते। खैर, भक्तों के आ रहे चढ़ावे से हमारी एक समस्या जरूर सुलझती दिखी। बाबाजी के खाने का प्रबंध अब हमें नहीं करना पड़ता। हर शाम बाबाजी के आदेश पर हम सारे चढ़ावे को उठाकर दलान में रख देते और बाहर से कुण्डी पर ताला लटका देते। इस प्रकार बाबाजी का काम चल जाता और उनके सौजन्य से हमें भी चढ़ावे का कुछ भाग मिल जाता। एक तरह से हमारी भी अच्छी कट रही थी।

परन्तु इस बदलते माहौल से हमारी तैयारी भी बुरी तरह से प्रभावित हो रही थी। रात दिन दरवाजे पर मेला सा लगा रहता। कभी बुलेट बाबा के जयकारे से सारा गाँव गुँज उठता तो कभी शिशुओं के रोने की आवाजों से हम झुँझला उठते और किताब पटककर बाहर चल देते। घर के पिछवाड़े स्थित चापाकल भक्तों की बढ़ती संख्या, उनकी पानी की आवश्यकताओं को पूरा करत-करते खुद ही परेशान था। कई भक्त तो तड़के ही चल देते और यहाँ आकर हमारे ही कल पर स्नान आदि करते। एक दिन तो हद तब हो गई जब हमारा चापाकल दुर्गति को प्राप्त हुआ और इसकी मरम्मत करने में पाँच सौ रुपये का भारी भरकम खर्च हमारे मत्थे पड़ा। समस्याएँ बढ़ती ही जा रही थी। अब तो मुँगफली और समोसे कचौड़ी वाले भी हमारे यहाँ आकर व्यापार करने लगे थे। यह सब दृश्य देखकर हमें देव आनंद साहब की गाईड फिल्म की याद आती। एक ओर जहाँ हम लाचार, बेबस से

घर के आँगन में बैठे आसमान को निहारते और अपने बीते दिनों की याद करते वहीं दूसरी ओर बुलेट भईया की चाँदी हुई जा रही थी। बुलेट भईया के देसी कट्टे को देखकर हमें उनसे कुछ कहने की भी हिम्मत नहीं होती।

अभी लगभग कुछ एक दो दिन बाद, हम आँगन में बैठे दाढ़ी बना रहे थे। चेहरा फोम से ढका हुआ था। तभी अचानक दूर कहीं से आती किसी पुलिस जीप के सायरन की आवाज सुनाई दी। उस समय हमने जिस खुशी को महसूस किया, उसका हम शब्दों में वर्णन नहीं कर सकते। हमने सोचा कि चलो बला टली। बाबाजी की गिरफ्तारी वाला सीन हम मिस नहीं करना चाहते थे। अतः फोम से पुता हुआ चेहरा लिए हम दरवाजे की ओर भागे।

कड़ी दोपहर की धूप में स्थानीय थानेदार, 'दबंग' फिल्म से प्रभावित आखों पर काला बड़ा चश्मा लगाए और अपनी पतली-पतली मुँछों पर ताव देता हुआ, जीप में से उतरा। उसके पीछे पीछे दो और हवलदार भी उतरे। बुलेट बाबा का प्रवचन उस समय पूरे जोश में था। थानेदार और उसके हवलदार बुलेट बाबा के सामने जाकर खड़े हो गए। हम दिल थामकर यह कार्यवाही देख रहे थे। यकीन मानिए जनाब, एक पल के लिए तो हमने देखा कि बुलेट बाबा के माथे पर पसीने की बुँदें छलक आई थी। कुछ देर के लिए उनके पाँव तले की जमीन खिसकती मालूम हुई। परन्तु उसके बाद का दृश्य जो हमने देखा, तो किस हद तक आश्चर्य से भर गए, हमें स्वयं स्मरण नहीं। वह थानेदार बाबा के चरणों में लोटता हुआ बोला, “बहुत सुने हैं बाबाजी आपके बारे में बस हमें आशीर्वाद दे दीजिए कि जल्द से जल्द हमारी तरक्की हो जाए और हम इंस्पेक्टर बन जाएँ। अहो भाग्य हमारे कि आज आपके दर्शन हुए।” थानेदार का अनुसरण करते हुए उसके दोनों हवलदार उसके पीछे दण्डवत हो गए। हमने देखा कि बुलेट बाबा के चेहरे पर कुटिल मुस्कान पसर गई। अपने दोनों हाथ उपर उठाकर उन्होंने कहा “सुखी रहो वत्स! जल्द ही तुम्हारी तरक्की होगी और तुम्हारे घर एक सुशील कन्या तुम्हारी पत्नी के रूप में आएगी।” इतना सुनते ही थानेदार ने एक झटके में अपनी गरदन

उठाकर बाबाजी को बड़े ही भावपूर्ण ढंग से देखते हुए कहा “हम तो सब जानते हैं बाबा!” “जय हो! जय हो!” चिल्लाता हुआ वह थानेदार नाचने सा लगा, बाबाजी मेरा बस चले तो मैं अपनी ये पिस्तौल भी आपको भेंट कर दूँ। लेकिन क्या करें, सरकारी है, गोली गोली का हिसाब देना पड़ता है। अबे उठ रे, थानेदार ने एक हवलदार को फटकारते हुए कहा जाकर गाड़ी में जो मिठाई फल रखे हैं, ले आ। अब आप समझ ही सकते हैं कि उस समय हमारी मानसिक स्थिति क्या रही होगा। उस घटना के बाद तो एक प्रकार से जैसे बाबाजी को अपने प्रवचन के लिए पुलिस का लाईसेंस मिल गया था। न तो घबराने की फ्रिक रही, न ही देसी कट्टा जब्त होने की।

बस इसी प्रकार दिन निकलते गये। बाबाजी दिन रात प्रसिद्धि के नए-नए कीर्तिमान स्थापित कर रहे थे। भक्तों की संख्या बढ़ती जा रही थी। अब तो जिले के विभिन्न कोनों से लोग बाबाजी के पास अपनी अपनी समस्याएँ लेकर पहुँचने लगे थे। हफ्ते में एकाध दो बार तो थानेदार भी उनके दर्शन के लिए आ धमकता। किन्तु अब समय हो चुका था बाबाजी के पोलिटिकल कैरियर के शुरू होने का। पहली पारी में धमाकेदार प्रदर्शन करने वाले बुलेट भईया, अब दूसरी पारी की शुरुआत करने को तैयार खड़े थे। और इस परिवर्तन में सबसे अहम भूमिका निभाई हमारे डाकिए साहब ने आईए जाने हैं यह रोचक घटनाक्रम।

बाबाजी को आए डेढ़ दो महीने हो चुके थे। एक शाम को हम प्रतिदिन की तरह दलान में चढ़ावे को रखकर ताला लगाने की तैयारी में थे। तभी अचानक सन्नाटे को चीरती हुई एक काले रंग की स्कॉर्पियो गाड़ी हमारे दरवाजे पर आकर रुकी। गाड़ी में से एक हट्टा कट्टा दिखने वाला अधेड़ उम्र का व्यक्ति, सफेद खादी के कुर्ता पजामे में, डाकिए के साथ उतरा। उसके पीछे पीछे दो तीन चेले चमचे भी उतरे। डाकिए ने कहा, “आपका बहुत बहुत धन्यावाद, बाबाजी। आपके बताए हुए तरिके एवं औषधि से मेरी पत्नी अब पूर्णतः स्वस्थ है। आपकी कृपा तो अपने सभी भक्तों पर रहती है। यहाँ हमारे साथ यह विधायक जी पधारे हैं। यह

भी आपकी शरण में आना चाहते हैं। कृपया इनकी समस्या का समाधान करें।” बाबाजी ने कहा “कहो वत्स, हम किस प्रकार तुम्हारी सहायता कर सकते हैं।” विधायक जी ने अपना परिचय देते हुए कहा, “बाबाजी, हमारा नाम प्रभात रंजन है। हम पुरुलिया विधान सभा क्षेत्र से विधायक है। हमारी श्रीमती जी अपने क्षेत्र में मुखिया का चुनाव लड़ने वाली है। चुनाव अगले हफ्ते के सोमवार को होना है। इस चुनाव की तैयारी में हमने प्रचार इत्यादि में काफी खर्च किया है गरीबों को मुफ्त कंबल, अनाज, बीज, यहाँ तक कि पैसे भी बँटवाए हैं। लेकिन फिर भी विरोधी उम्मीदवारों का पलड़ा भारी लग रहा है। अब आप ही बताएँ बाबाजी कि हमें इतने कम समय में ऐसा क्या करें कि हमारी श्रीमती जी यह चुनाव जीत जाएँ। हमें तो लग रहा है कि हमारा सारा खर्च बर्बाद हो जाएगा।”

बड़ी देर तक सोचने विचारने के बाद बाबा ने समस्या का समाधान सुझाया, “वत्स, तुम्हारी समस्या का हमारे पास एक अनोखा समाधान है तुमने गरीबों में इतनी सारी चिजें तो बँटवाई लेकिन इस बात पर शायद ध्यान नहीं दिया कि एक गरीब किसान की सबसे प्राथमिक आवश्यकता क्या होती है? विधायक जी ने अचरज से भरकर पूछा “क्या?”— “बैल, वत्स, बैल! बिना बैल के वह ना ही खेत जोत सकता है, ना ही अपने परिवार का पेट भर सकता है।” विधायक जी ने कहा, “हाँ, यह तो आपने सही कहा लेकिन हम आपकी बात कुछ समझे नहीं।” बाबाजी ने समझाया, “सुनो हम, जैसा बताते हैं वैसा करो। इससे साँप भी मरेगा और लाठी भी नहीं टूटेगी। पहले यह बताओ कि तुम्हारे गाँव की आबादी लगभग कितनी है?” नेताजी ने कहा, “यही करीब डेढ़ दो हजार!” बाबाजी ने बताया, “तो तुम ऐसा करो कि भाड़े पर पचास-साठ गुण्डों का प्रबंध करो। वे हर रात तुम्हारे गाँव के घरों में जाकर गाय बैलों को चोरी से अथवा जबरन अगवा करेंगे और नहर के पिछे वाली पुरानी बन्द पड़ी फैक्ट्री में जाकर बाँध देंगे। वैसे भी वहाँ कोई जाता नहीं। सभी बेबकूफ गाँव वाले वहाँ भूतप्रेत का साया मानते हैं। इन बढ़ती चोरी-चकारी, डकैती की घटनाओं से तत्कालीन मुखिया जी की पत्नी तो

कटी समझी! यहाँ का थानेदार मेरा परम भक्त है। मैं उसे बता दूँगा कि इस मामले में वह कोई छानबीन न करे अन्यथा उस पर शनि का प्रकोप हावी हो जाएगा” इतना कटकर बुलेट बाबा ठठाकर हँस पड़े। विधायक की आँखों में एक अजीब सी चमक आती दिखी। वहीं बेचारा डाकिया यह सोचकर हैरान था कि धार्मिकता के आगे पीछे राजनीति का समीकरण समझने वाला यह मनुष्य एक संत तो कदाचित नही हो सकता। बाबाजी ने आगे बताया, “यह सब होने के तीन-चार दिनों बाद तुम औपचारिक रूप से यह घोषणा करवा दोगे कि जिन जिन के मवेशी गायब हुए हैं, तुम उन्हें शहर से गाय बैल मँगवाकर दोगे, अपने खर्च से। उन सभी की एक लिस्ट तैयार कराकर उनके मवेशी-गाय, भैंस, बैल, वगैरह वगैरह आपस में बाँट देना। यानि किसी की गाय किसी के घर और किसी की भैंस किसी और के घर। इससे तुम्हारे प्रति उनकी सहानुभूति अत्यधिक हो जाएगी और दो दिन बाद होने वाले चुनाव में सारे बोट तुम्हारी पत्नी के खाते में गिरेंगे। बोट हो जाने के बाद जब गाँव वाले अपने अपने मवेशियों को पहचानकर एक दूसरे पर चोरी का इल्जाम लगाएँगे, तब तक तो तुम्हारी पत्नी जीत चुकी होगी। यानि हर तरह से बाजी तुम्हारे हाथ, आगे से या पीछे से।”

बाबा की योजना की जटिलता समझ में आते ही हमने उनकी बुद्धि का लोहा मान लिया। विधायक जी तो मानिए सातवें आसमान पर पहुँच गए। अपने कुर्ते की जेब में से हरी पत्तियों की एक पतली सी गड्डी निकाल बुलेट भईया के समाने रखते हुए बोले “मित्र, तुम साधू तो नहीं हो, नेता भी नहीं हो।

इसके बावजूद भी तुम्हारा दिमाग हम नेताओं से तेज चलता है। तुम्हारी इस नकली दाढ़ी मुँह के पीछे जो पच्चीस तीस वर्ष के युवक का चेहरा है, वह मुझे बड़े ही स्पष्ट रूप से दिखाई से दे रहा है। सच-सच बताओ मित्र तुम कौन हो ताकि मैं तुम्हारी कुछ मदद कर सकूँ। यही सब देखकर डाकिया स्तब्ध था। लेकिन इसके बाद जो हुआ वह और भी चौकाने वाला था। हमने भी दाँतो तले उँगली दबा ली।”

बुलेट भईया ने एक झटके में अपना ढोंगी रुपी कवच नोच फेका साथ ही

अपने लम्बे बाल, कृत्रिम दाढ़ी मुँछ, सब बुछ। बोले, “श्रीमान अब जब आपने सबकुछ जान ही लिया है तो फिर छिपाने का क्या लाभ। हम कोई साधु महात्मा नहीं जेल से भागे हुए कैदी हैं। हमारा नाम बुलटेश्वर प्रसाद है लोग हमें हमारे गाँव में बुलेट मैन के नाम से ही जानते हैं। यह सब ढोंग हमने पुलिस की आँखों में धूल झोकने के लिए रचा था।” बुलेट भईया ने डाकिए की ओर देखते हुए कहा, “हमें माफ कर दीजिएगा जनाब। हमारे पास दूसरा कोई उपाय न था।” डकिया मूर्ति के समान बुलेट भईया को देखते ही जा रहा था। विधायक जी खड़े हुए और बुलेट भईया के कन्धे पर हाथ रखते हुए बोले, “मित्र, आज से तुम हमारे साथ रहोगे हमें तुम्हारे दिमाग की जरूरत है। और हाँ डकिया बाबू, आपको मुँह फाड़ने की कोई जरूरत नहीं है यह आदमी चाहे जो कोई भी, आखिर इसके बताए नुस्खे से आपकी श्रीमती जी तो स्वस्थ हो गई न। तो बस घर जाइये और आराम से चद्दर तान के सो जाइये। और ई मुखिया वाला चुनाव के बाद बुलेट बाबू हमारे साथ दिल्ली चलेंगे। क्यों, महात्मा, नहीं बुलेट भईया बुलेट भईया और विधायक जी एक साथ ठहाका मारकर हँस पड़े। डाकिए के चेहरे पर भी एक दुविधापूर्ण मुस्कुराहट पसर गई। दलान के दरवाजे की ओट में छिपकर हमने यह सब देखा। हमारा तो दिमाग जैसे करवटें बदल रहा था। बुलेट भईया पर हमारा शक सही था।

अगले हफ्ते भर लगभग बुलेट बाबा का ढोंग जारी रहा। वह शायद इस बात से अनभिज्ञ थे कि हम उनकी वास्तविकता जान चुके हैं। दिनभर भक्तों को प्रवचन सुनाते और अपना देसी कट्टा दिखाते रहते।

गाँव के मुखिया वाले चुनाव में विधायक जी ने बाबा के कथनानुसार मवेशियों का फेरबलद कर दिया। परिणामवश, विधायक जी की पत्नी भारी मतों से विजयी हुई। यह सूचना मिलते ही हमने अनुमान लगा लिया कि बुलेट भईया अब शीघ्र ही हमारे यहाँ से प्रस्थान करेंगे। चलो जान छूटी, यह सोचकर हम मन ही मन हल्का महसूस कर रहे थे। लेकिन जिस अंदाज से बुलेट भईया छुमंतर हुए उसकी हमने कल्पना न की थी।

एक सवेरे जब हम दिनू ग्वाले के यहाँ से कनस्तर में दूध लेकर लौटे तो क्या पाया कि बाबा अपनी जगह से गायब थे। उनकी चारपाई खाली पड़ी थी। और उनका झोला, कुर्ता, इत्यादी सब कुछ वहाँ से नदारद था। बुलेट भईया का यह व्यवहार हमें रास न आया। हमने सोचा, इनते दिनों तक वह हमारे यहाँ रहा, हमारी सेवाएँ लेता रहा, कम से कम कहकर तो जाना चाहिए था। फिर दिमाग के एक कोने ने उत्तर दिया कि एक जेल से फरार कैदी से और क्या अपेक्षा की जा सकती थी।

उस दिन दोपहर तक आने वाले भक्तों को हम यह बता बताकर थक गए कि बाबा वहाँ से जा चुके थे। शाम को जब धोबी आया जो हमने सोचा कि बुलेट भईया की चारपाई पर बिछी चादर को धुलने के लिए देना चाहिए। हमने जाकर चादर समेटी तो नीचे से एक कागज का टुकड़ा गिरा। हमने उस टुकड़े को खोला तो पाया कि जल्दी-जल्दी में लिखी एक चिट्ठी थी।

प्रिय मित्र,

हमें अपने यहाँ रखने के लिए तुम्हारा बहुत बहुत धन्यवाद। हम जानते हैं कि तुम हमारे बारे में सबकुछ जान गए हो। हमें यह ज्ञात था कि उस रात हमारी विधायक से हुई बात-चीत को तुमने दरवाजे की ओट से छिपकर सुन लिया था। फिर भी हमने तुमसे कुछ भी नहीं कहा क्योंकि हम चाहते थे हमारे जाने के पूर्व तुम हमारे बारे में सबकुछ जान लो। इतने लंबे समय तक अपनी असलियत छिपाने के लिए हम तुमसे माफी चाहते हैं।

बिना तुम्हारी जानकारी के हमने एकाध बार शराब भी पी थी। हमने जब तुम्हें उस दिन शराब की बोतलों को ढुँढते देखा, तो हम समझ गए थे कि तुम्हें हम पर शक हो गया था। क्या करें मित्र पीने की बड़ी पुरानी आदत जो है, चाहे भी नहीं छूटती। अतः, मैं तुमसे माफी माँगता हूँ।

इस तरह बिना बताए जा रहा हूँ। इसका मुझे ताउम्र अफसोस रहेगा। शायद विधायक जी के पास चले जाने से पुलिस से मेरा पीछा छूट जाएगा। आशा करता

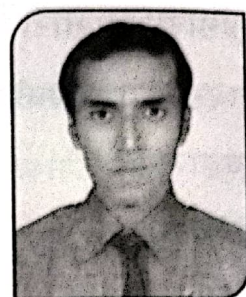
हूँ कि एक मित्र के नाते तुम मेरी पोल नहीं खोलोगे। इसके लिए मैं हमेशा तुम्हारा आभारी रहूँगा। अगर जीवित रहा अथवा इस देश के किसी जेल में सड़ता न रहा तो, उम्मीद है भविष्य में फिर मुलाकात होगी।

तुम्हारा,
बुलेट मैन।

इस पत्र को पढ़ने के बाद हम एक पल के लिए भावुक हो गए। हमें यह बात आज जक समझ नहीं आई कि ऐसा आखिर क्यों हुआ। जिस व्यक्ति से हम हर पल पीछा छुड़ाने की जुगत में लगे रहते, उसके प्रति हमारे मन में भला, यह कैसी भावनाएँ जन्म ले रही थी। बड़ा विचित्र पल था वह, एक ओर जहाँ उनके चले जाने का हम हल्का महसूस कर रहे थे। वहीं दूसरी ओर ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो एक अति प्रिय मित्र हमसे हमेशा के लिए दूर चला गया हो। उनके प्रति हमारी धारणा का स्वरूप परिवर्तित हो रहा था। कल शाम इस समय दरवाजे पर बुलेट बाबा का प्रवचन अपने पूरे शबाब पर था, और लाउडस्पीकरों की ध्वनि हमारे कान के परदे झकझोर रही थी। किन्तु आज उसी स्थान पर एक विवित्र सन्नाटा फैला था और वहाँ न ही बुलेट बाबा थे और ना ही उनके भक्त। सबकुछ बिल्कुल वैसा ही हो गया था जैसा कि हम चाहते थे। फिर भी एक अजीब सी कमी खल रह थी। न जाने क्यों? क्या हमें भी नौटंकी की आदत पड़ चुकी थी?

धोबी की चिल्लाती आवाज से हमारा ध्यान भंग हुआ “अरे बाबू चादर दोगे कि हम जाएँ”, “अभी आया” कहकर हम चादर को समेटते हुए उसकी ओर बाढ़ गए।

ऊर्जा संरक्षण के लाभ



श्री धीरज कुमार
(एम0टी0एस0)

भारत तीव्र विकास के साथ आर्थिक वृद्धि के मार्ग पर गतिमान है। साथ ही इसे मौसम परिवर्तन की वैश्विक चुनौति का सामना करना है। भारत के पास अनोखे प्राकृतिक संसाधन हैं तथा इसके विकास का मार्ग काफी हद तक इनके दोहन पर निर्भर करता है। अब संरचना का विकास, ऊर्जा संबंधी आवश्यकताओं को पूरा करना, निर्धनता उन्मूलन और सामाजिक विकास भारत के सामने कुछ अनिवार्य प्राथमिकतायें हैं, जिन्हें पर्यावरण से कोई समझौता किए बिना और पारिस्थितिक संतुलन बनाए रखते हुए प्राप्त किया जाना है। मनुष्य ऊर्जा के बिना रह नहीं सकता है। ऊर्जा मुख्य रूप से दो स्रोतों से प्राप्त की जाती है -

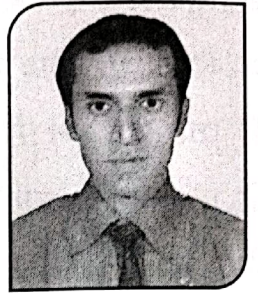
- (i) नवीकरणीय ऊर्जा स्रोत, जैसे-सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा, विद्युत संयंत्र आदि,
- (ii) अनवीकरणीय ऊर्जा स्रोत-कोयला, पेट्रोलियम, प्राकृतिक गैस आदि से प्राप्त ऊर्जा।

वर्तमान में हमारे अनवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों के भंडार खत्म होने के कगार पर पहुँच गये हैं। अगले 50 वर्षों तक ही हमारे कोयले के भंडार सहयोग दे पायेंगे। अतः इस बात हो ध्यान में रखते हुए हमें नवीकरणीय ऊर्जा स्रोत जिसे “अक्षय ऊर्जा” भी कहा जाता है, पर विशेष जोर देना चाहिए। सभी प्रकार के ऊर्जा (पारम्परिक तथा अपारम्परिक) का प्रधान स्रोत सूर्य हैं। पारिस्थितिक दृष्टि से सौर चिमनी या सौरतापीय विद्युत उत्पन्न करने में नुकसान नहीं है, बरन लाभ

है। क्योंकि इससे कोई नुकसानदेह गैस वातावरण में उत्सर्जित नहीं है। इसके उत्पादन में ईंधन की आवश्यकता नहीं पड़ती है। इसलिए आयातित कोयले, तेल या गैस पर निर्भरता कुछ देशों में कम की जा सकती है। इसकी प्रचालन लागत भी काफी कम है, जो इसकी अधिक पूँजी लागत में संतुलन लाती है। ऐसे गाँव जो दूरस्थ हैं, जहाँ पारम्परिक ग्रिड आधारित बिजली नहीं पहुँच सकी है, वहाँ इस परिदृश्य में सौर प्रकाश वोल्टीय विद्युत उत्पादन प्रणाली विद्युतीकरण के लिए सर्वाधिक व्यवहार्य और किफायती समाधान के रूप में उभरकर आयी है। वर्तमान समय में रसोई गैस के लाले पड़ गये गए हैं इस समस्या से निदान हेतु सोलर कुकर का उपयोग काफी लाभप्रद होगा। बहता हुआ जल और पवन भी ऊर्जा का उत्तम स्रोत हैं। जिसे अधिकाधिक युक्तियों द्वारा उपयोग में लाया जा सकता है।

अतः किंकर्तव्यविमूढ़ स्थिति से बाहर आकर हमें ऊर्जा का संरक्षण करना चाहिए क्योंकि यह आवश्यक भी है और लाभप्रद भी।

वैश्वीकरण के संदर्भ में लिंग विभेद तथा महिला सशक्तिकरण



श्री धीरज कुमार
(एम०टी०एस०)

वैश्वीकरण के इस युग में पर्यावरण विनाश का प्रमुख कारण विकासशील देशों में बढ़ती जनसंख्या, लिंग-भेद, उपभोक्तावादी दृष्टिकोण अपनाने की होड़ के कारण प्राकृतिक संसाधनों पर असर पड़ा है, शिक्षा की जागरूकता के अभाव में पर्यावरण संबंधी सभी परेशानियों व विभीषिकाओं का सामना करना पड़ रहा है। ग्लोबल वार्मिंग.... आज मानव सभ्यता के लिए सबसे बड़ा खतरा है और इस संकट से निपटने के लिए हम सभी को मिलकर प्रयाश करना होगा। आज विश्व के हर देश में महिलाओं के समुचित विकास एवं सशक्तीकरण के लिए अनुकूल वातावरण बन रहा है, फिर भी लिंग-भेद की संकुचित दृष्टि देखने के लिए मिलती है। स्त्रियों को लेकर कई प्रकार की अज्ञानता, पूर्वाग्रह एवं उपेक्षा नजर आती है। आज औसतन पूरी दुनिया में एक जैसे काम करके भी औरतें सामाजिक रुढ़ियों, आर्थिक भेदभाव और राजनीतिक संवेदनहीनता के कारण पुरुषों से 30% से 40% तक कम भुगतान पाती हैं। 81% ग्रामीण महिलायें उपेक्षा की शिकार हैं। कन्या भ्रूण हत्या का चलन बहुत ज्यादा हो गया है जो समाज के लिए अभिशाप है। आज लिंगानुपात 945 (1000 में), साक्षरता में लिंग विभेद 25.6% है। महिलाओं में चेतना जगाकर उन्हें उनके अधिकारों से अवगत कराने की आवश्यकता है। यह सर्वविदित है कि महिलाओं को विकास की मुख्य धारा से जोड़े बिना किसी समाज, राज्य एवं देश की आर्थिक, सामाजिक एवं राजनीतिक विकास

की कल्पना नहीं की जा सकती है। नारी आज अपने अस्तित्व एवं अस्मिता पर स्वयं चिन्तन हेतु जागृत हुई है। कवि केदार नाथ अग्रवाल की अधोलिखित पंक्तियाँ नारी के चरित्र, व्यक्तित्व एवं शक्ति को सार्थकता देती हैं। -

मैंने उसको, जब-जब देखा,

लोहा देखा, लोहा जैसा,

तपते देखा, गलते देखा,

ढलते देखा, मैंने उसके

गोली जैसा, चलते देखा।

दीपक जब जलता है, न केवल स्वयं प्रकाश से प्रकाशवान होता बल्कि दूसरों के मार्ग को भी प्रशस्त करता है। जैसा कि स्वामी विवेकानन्द ने कहा है। “मुझे आप सौ शिक्षित माताएँ दीजिए, मैं भारतीय समाज का नक्शा ही बदल दुगाँ।”

अतः नारी को शिक्षित, सुसंस्कृत, सशक्त एवं सचेत बनाया जाये तो वह समाज का उपयोगी अंग बना सकेगी।

प्यारी माँ



सुश्री सुष्मिता सरकार
(लेखाकार)

लिख रही हूँ खत तुम्हें, मन की इस तनहाई में,
कैसी हो तुम माँ मेरी, कैसी हो तुम बिना मेरे।
बहुत दूर हूँ मैं अब तुम से, बहुत बड़ी भी हो गयी
तुम्हारे बिना इतनी अकेली जो रह गयी।
सब कहते हैं नौकरी मिली है, घर से दूर है तो क्या हुआ,
पर मैं जानती हूँ इस खबर से, तुम्हें भी कितना दुख हुआ।
प्यार तुम्हें जो करती हूँ इतना, अंजान थी इस बात से,
जान गयी अब दुख है कितना, तुमसे दूर रहने से।
जानती हो माँ, जब रिमझिम बारिश गिरती है,
जब ठंडी हवा बहती है, अकेली इस पिजरे में जब
मन चुपके से रोती है।
तब बादलों के पीछे से, तुम आती तो कुछ धीरे से,
ममता भरी खुशबू से, मुझे घेर लेती हो आँचल में,
थकी हुई इन आँखों में तब नींद का बादल छाता है
खोया हुआ प्यारा बचपन फिर सपनों में मिल जाता है।
बोलो माँ, मेरी जैसी तुम भी
याद हमें भी करती हो ?
मन ही मन में शायद तूम भी
खत हमें भी लिखती हो।

आकांक्षा



सुश्री सुष्मिता सरकार
(लेखाकार)

गया-पटना पैसेंजर ट्रेन में उस दिन भीड़ बहुत ज्यादा थी। सुहासिनी अपने मायके से पटना लौट रही थी। शादी के पाँच साल बाद यह पहली बार था जब वह अकेली सफर कर रही थी। मन में थोड़ी घबराहट के साथ-साथ छोटी सी आजादी का एक रोमांच भी था। सुहासिनी हर साल दो बार अपने मायके, गया और ससुराल दरभंगा में जाती है, जब उसके पति अविनाश को अपने कॉलेज से लंबी छुट्टी मिलती है। अविनाश पटना कॉलेज में भौतिकी के प्रोफेसर हैं। कॉलेज में कुछ जरूरी काम के वजह से इस बार वो सुहासिनी के साथ गया नहीं जा पाए थे। सात दिन मायके में घरवालों के साथ बिताने के बाद सुहासिनी पटना में अपनी छोटे से फ्लैट में लौटने के लिए बेचैन हो गयी थी। वैसे विमला मौसी तो है ही घर की देखभाल करने के लिए, फिर भी सुहासिनी जब भी इतने दिनों के बाद लौटती है तो देखती है तो कि उसका सजाया हुआ घर उलझा हुआ है। फिर वह अपने हाथों से सब सजाती है, मन भर के रसोई करती है और महसूस करती है कि उसके लौटने से अविनाश को भी बहुत सकून महसूस होता है। एक लड़की का जीवन भी अजीब होती है न! जिस घर में जन्म ली, जिन लोगों के साथ बचपन बिताया, शादी के बाद घर, वे लोग पराये हो जाते हैं और पराया घर, पराए लोगों को अपनाना पड़ता है। समय के साथ-साथ जिंदगी भी बदल जाती है। इन्हीं सब भावनाओं की लहर में डूब गई थी सुहासिनी कि अचानक एक औरत भीड़ में परेशान होकर सुहासिनी के गोद में अपनी छोटी-सी बच्ची को डाल दिया और

बोलने लगी कि इस भीड़ में बच्ची को लेकर खड़े होकर रह नहीं पा रही है, इसलिए कुछ देर सुहासिनी अगर बच्ची को अपनी गोद में रख लेगी तो बड़ी मेहरबानी होगी। सुहासिनी व्यस्त हो गई और बच्ची को संभाल कर अपनी गोद में लिटा दी। कुछ ही देर में वह बहुत अच्छा महसूस करने लगी। बच्ची इतनी छोटी-सी और प्यारी-सी थी कि कुछ ही पल में वह सुहासिनी के मन में जगह बना ली। उसके शरीर की नर्म स्पर्श और चेहरे की मासूमियत सुहासिनी के मातृत्व हृदय को स्नेह से भर दी। सुहासिनी की आँख भर आई। उसके सूखे जीवन में सिर्फ एक संतान की कमी थी जिसके लिए वह दिन-रात भगवान से प्रार्थना करती थी। कोई भी पूजा-पाठ, इलाज, जड़ी-बूटी सभी का पालन करती थी, पर उसका आँगन सूना था। इसलिए इस बच्ची को गोद में लेकर वह मन ही मन संतान-सुख का अनुभव कर रही थी। सोच रही थी, इसका नाम क्या होगा, इसकी माँ इसे किस नाम से पुकारती होगी? अगर यह सुहासिनी की अपनी बच्ची होती तो इसे कैसे सजाती, कैसे सारा दिन खुशी-खुशी बीत जाता। यही सब सोचते-सोचते कब ट्रेन पटना जंक्शन पहुँच गई, पता नहीं चला। सुहासिनी उतरने के लिए व्यस्त हो गई पर वह औरत कहीं नहीं दिख रही थी, जिसने उसके गोदे में बच्ची को थोड़ी देर रखने के लिए बोला था। सुहासिनी जोर-जोर से बुलाने लगी “अरे अपनी बच्ची को ले लो मुझे उतरना है” पर कोई नहीं आया। सब पैसेंजर एक दूसरे को धकेलते हुए ट्रेन से उतर गये। सुहासिनी बच्ची को लेकर परेशान हो गई। आसपास जितने लोग थे सबको पूछी पर कोई पलट कर नहीं देखा। सबको जल्दी थी। अब क्या करेगी सुहासिनी! इधर-उधर की भीड़ से आवाज आने लगी, बच्ची लड़की है न! इसी कारण इस नवजात शिशु का किस तरह परित्याग किया गया। ऐसी घटनाएँ तो अपने देश में हर रोज घटती हैं। कन्या होने के कारण नवजात शिशु कूड़ेदान, नाले, झाड़ी, रास्ते में फेंक दी जाती है। कन्या शिशु को परित्यक्त करने का यह नया तरीका है। सुनते-सुनते सुहासिनी का सिर चकराने लगा। चारों तरफ अंधेरा नजर आने लगा। अब वह क्या करेगी? इस बच्ची को

लेकर कहाँ जाएगी ? एक बार तो दिमाग में आया सीधा इसे अपने घर में ले चलते हैं, इसको अपना लेते हैं। इतनी प्यारी शिशु को लोग कैसे परित्याग कर सकते हैं यह सोचकर सुहासिनी हैरान हो गई। पर इसको अपनाने के लिये क्या अविनाश मान जायेंगे ?

उधर प्लेटफार्म पर अविनाश सुहासिनी का इंतजार कर रहे थे। गोद में एक शिशु को लिये सुहासिनी को देखकर वह कुछ पूछते, इससे पहले ही सुहासिनी हांफते हुए रोने लगी। सब कुछ सुनने के बाद अविनाश स्टेशन मास्टर के पास गये। वहाँ से रेलवे पुलिस, फिर लोकल थाना गए। दोपहर से शाम, शाम से रात हो गई। पुलिस कस्टडी में बच्ची को रखा गया था, इस कारण सुहासिनी दुखी हो गई। अविनाश इतने परेशान थे कि सुहासिनी उन्हें मन की बात कह नहीं पायी। बच्ची को छोड़कर घर आते समय पूरे रास्ते वह रोते रही। अविनाश पूछते-पूछते थक गये पर सुहासिनी कुछ न बोली। सारे दिन की थकान से घर लौटते ही वह गहरी नींद में सो गई और सपनों में देखी कि वह एक छोटी-सी बच्ची के साथ छत पर खेल रही है और दोनों ही बहुत खुश हैं। अचानक खेलते-खेलते बच्ची सीढ़ी से गिर गई। सुहासिनी चीखी और उसे बचाने के लिए दौड़ पड़ी, पर बचा न सकी। इतने में सपना टूट गया और सुहासिनी फूट-फूटकर रोने लगी। अविनाश ने उसकी सारी बातें सुनी, फिर उस बच्ची को अपनाने के लिए तैयार हो गये। बच्चा गोद लेने की सभी कानूनी कारवाई पूरी होने पर अविनाश और सुहासिनी उस बच्ची को अपना लिए। बहुत प्यार से उसका नाम रखा - आकांक्षा।

देखते-ही-देखते 25 साल बीत गये। आज आकांक्षा का युनिवर्सिटी में दीक्षांत समारोह है। अविनाश और सुहासिनी दर्शकगण के बीच में बाकी सभी माता-पिताओं के साथ बैठे हुए हैं। तभी माइक पर अनाउंस हुआ मेडिकल कॉलेज के फर्स्ट क्लास फर्स्ट स्टूडेंट का नाम अविनाश और सुहासिनी का आशीर्वाद लेकर स्टेज की तरफ आगे बढ़ी आकांक्षा। गर्व से माता-पिता की आँखें भर आई और चारों तरफ से उन्हें सभी लोगों ने बधाई देने के लिए घेर लिया।

हैप्पीनेस मसाला



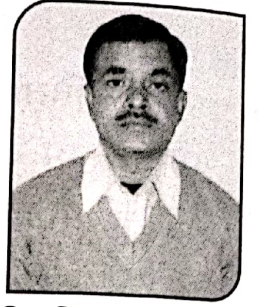
सुश्री प्राची श्री
सुपुत्री नीतू कुमार
(स०ले०अ०)

1. पति और पत्नी डॉक्टर के पास अपना खून जाँच करवाने गये। खून जाँच करने बाद डॉक्टर ने बताया कि आप दोनों का ब्लड ग्रुप एक है।
पति बोला - वो तो होगा ही, 20 सालों से मेरा खून जो चूस रही है।
2. एक चार्टर एकाउण्टेंट ने एक व्यक्ति से पूछा - साहब, शादी के समय पत्नी अपने पति के दाईं ओर बैठती है या बाईं ओर!
व्यक्ति ने कहा - तुम अपने कैश बुक में खर्च जिस तरफ दिखाते हो, पत्नी उसी तरफ बैठती है!
3. एक बुढ़ा यात्री बिना टिकट के अयोध्या जा रहा था। टी०टी० को देखते ही उसके होश उड़ गये। टी०टी० ने यात्री से पूछा- कहाँ जाना है? यात्री बोला जहाँ राम जी जन्म लिए थे। टी०टी० ने टिकट माँगी, टिकट तो था ही नहीं। टी०टी० बुढ़े यात्री को ले जाने लगा। बुढ़े ने पूछा-कहाँ ले जा रहे हो? टी०टी० ने जवाब दिया-जहाँ कृष्ण जी जन्म लिए थे।
4. तीन सहेलियाँ आपस में बात कर रही थीं।
पहली सहेली बोली - मेरे पति इतने भुल्लकड़ हैं कि जूता पहनने के बाद उन्हें मोजा की याद आती है।
दूसरी सहेली बोली-बस इतना ही, मेरे पति तो इतने भुलक्कड़ हैं कि पैन्ट पहनने के बाद ऊपर से जाँघिया पहन लेते हैं।
इन दोनों की बातों को सुनने के बाद तीसरी सहेली बोली - मेरे पति इतने भुलक्कड़ हैं कि एक दिन वो ऑफिस से आते समय रास्ते में मिले तो मुझे

देखने लगे और बोले- बहन जी ऐसा लगता है कि मैंने आपको पहले कही देखा है।

5. पुत्र - पिताजी, 'शटअप' का अर्थ क्या होता है ?
पिता-चुप रहो।
पुत्र - पहले बता दीजिए, फिर चुप हो जाऊँगा।
6. अध्यापक - (विद्यार्थी से) "मैंने चोरी की" इस वाक्य को भविष्य काल में बनाओ ?
विद्यार्थी - सर आप जेल जाएँगे।
7. अध्यापक (पढ़ाते हुए) - भारत में बड़े पैमाने पर खेती की जाती है।
एक छात्र - लेकिन सर! हमारे गाँव में अब भी जमीन पर खेती की जाती है।
8. पिता - बेटा अगर तुम पढ़-लिख कर बड़े आदमी बनोगे तो चारों कोनों में तुम्हारा नाम होगा।
पुत्र - पिताजी, पृथ्वी तो गोल है। पृथ्वी में चार कोना है कहाँ ?
9. मित्र - तुम्हारा लड़का बड़ा खराब है, गंदी-गंदी गालियाँ बकता है।
लड़के के पिता - अभी उम्र ही क्या है उसकी ? जरा बड़ा होने दीजिए, फिर अच्छी-अच्छी गालियाँ बकने लगेगा ?
10. मजिस्ट्रेट (एक आदमी से) - तुम्हें शर्म आनी चाहिए, हर चौथे-पाँचवे दिन अदालत में आते हो।
आदमी (मजिस्ट्रेट से) - शर्म तो आपको आनी चाहिए साहब! मैं तो कभी-कभी यहाँ आता हूँ और आप तो हर रोज ही यहाँ आते हैं।
11. एक चोर एक व्यक्ति के घर घुस गया और बोला-सोना कहाँ है ?
व्यक्ति बोला-पूरा घर खाली है, जहाँ मर्जी सो जाओ।

जीवन



श्री विजय प्रसाद
(व०लेखा०)

जवानी बुढ़ापे का पालन है। बुढ़ापे का संबल और कुछ नहीं, बल्कि जवानी को साध लेना है। जो यौवन के प्रचंड उर्जा एवं आवेग को साध और संभाल लेता है, वही बुढ़ापे में भी जवानी की उमंग और उत्साह बरकरार रख सकता है, यौवन जीने के लिए है, इस रागरंग में तो जी लेने दो। धर्म, कर्म, और पूजा-पाठ बुढ़ापे की बातें हैं। अभी से क्या करना है? यही मानसिकता यौवन को भी जर्जर, दुर्बल बना देती है। ऐसी दुर्बलता और अस्वस्थता में समय से पूर्व ही बुढ़ापा आ धमकता है और साधन साधना की बात मात्र कल्पना बनकर रह जाती है।

प्रकृति और जीवन सभी नियमों से बँधे हैं। पर नियम चलते हैं। जो नियमों का सही पालन कर लेता है, वही सफल होता है। बीज, वृक्ष और पुनः बीज के बीच की प्रक्रिया प्राकृतिक नियमों के अनुरूप होती है और ये हर अवस्था में एक दूसरे से अविच्छिन्न रूप से संबंधित होते हैं, पहले बीज जमीन में स्वयं को गलाता है, तब अंकुरित होकर वृक्ष बनता है। इसमें पुष्प आते हैं, फल लगते हैं और बीज पलता है। यही सुनिश्चित और नियम क्रम है। कोई भी अवस्था किसी का अतिक्रमण नहीं करती है। यही नियम है। ठीक ऐसे ही नियम जीवन के हैं। जन्म, जीवन और मृत्यु के बीच जीवात्मा की यात्रा पूरी होती है।

जन्म के पश्चात जीवन की कई अवस्थाएँ आती हैं, बचपन, किशोरावस्था, युवावस्था, प्रौढ़ावस्था, बुढ़ापा। बचपन का उचित देख-रेख सुदृढ़ किशोरावस्था का पर्याय है और संस्कारित एवं साधनामय यौवन समग्र जीवन तथा अंतिम अवस्था को भी उमंगित-तरंगित रखता है। ये सभी अवस्थाएँ जीवन की कड़ियाँ हैं, जो

आपस में गहराई से संवेदनशील सुत्रों से गुँथी-पिरोई हुई हैं। किसी कड़ी को किसी से अलग नहीं किया जा सकता है, परन्तु विडंबना है कि अपने जीवन को अपने ढंग से जीना चाहते हैं—स्वतंत्र एवं स्वच्छंद। यौवन में अपने तटबंधों को तोड़ना भी चाहते हैं और उद्दाम प्रवाह में किसी से थामने की आस लगाए बैठे रहते हैं। आज इंद्रिय सुखों को अधिकतम भोगने की लालसा ने बालकों को युवावस्था से पूर्व यौवन के राग रंगों में सराबोर कर दिया है। यौवन की दहलीज में कदम रखने से पूर्व ही यौवन जैसा जीवन जीने का उद्दाम आवेग अपरिपक्व शरीर और मन के लिए आत्मधाती सिद्ध हो रहा है।

विषय-वासना की अंतहीन यात्रा में रमण, असंयमित यौवन समय पूर्व अशक्त, असहाय एवं अपाहिज बुढ़ापे को आमंत्रण दे रहा है। बच्चे बच्चियों में नशा और उच्छृंखल सेक्स की अनकही पीड़ा आजकल फलते-फूलते क्लीनिक में बढ़ती एबॉर्शन की घटनाओं में बयान होती है। इसका कारण चाहे जो भी हो, इसकी जिम्मेदारी चाहे किसी पर पर क्यों न आरोपित करें, पर सच तो यही है कि यौवन की भोगवृत्ति की उद्दाम लालसा ने बच्चों के अपरिपक्व मन एवं नाजुक देह को पूरी तरह से तोड़ कर रख दिया है। इसमें जवानी ऐसे ढल रही है जैसे फूल फुलने से पूर्व मुरझा जाता है।

युवा दिल की धड़कनों में समाज और राष्ट्र के सुनहरे सपने संवेदित होते हैं, उनकी आँखों की चमक में भविष्य की योजनाएँ चमकती हैं। उनके विचारों में आंतरिक एवं भौतिक जीवन के सुत्र निखरते हैं।

उनकी आशाओं और उमंगों में बुढ़ापा भी यौवन जैसा उमंगित होता है और प्राणों के संचार में बुढ़ापे की अशक्ति मिलों दूर खड़ी रहती है, परन्तु विडंबना ही है कि हम यौवन को विषय भोगों में इतना डुबा दिये हैं कि सारे सपने इसी एक बिन्दु पर सिमट गए। भोग भोगने के लिए हमने सारी मर्यादाएँ तोड़-विखेर दी हैं। नारी के प्रति सारे संवेदनशील रिश्ते मात्र भोग बनकर परिभाषित हो चुके हैं। भोग को भोगने के फेर में स्थिति इतनी उलट गई है कि आज भोग हमें ही भोगने लगा है। भोग ने हमारे सारे अस्तित्व को चूसकर खोखला बना दिया है, जिसमें कुछ भी शेष नहीं है और जवानी में असमय बुढ़ापे ने दस्तक दे दी है।

बुढ़ापा एक दैहिक अवस्था के साथ-साथ अशक्त एवं रुग्ण मानसिकता भी है। इस मानसिकता को बदलकर बुढ़ापे में भी यौवन का संचार किया जा सकता है। यौवन कहते हैं—उद्दाम प्राणों के आवेग को, जो जहाँ से गुजर जाए अपने परिचय की अमिट छाप छोड़ जाता है। प्राणों का आवेग, उफनती उमंगें, कल्पनाशील मन, संवेदनशील हृदय तथा सृजनशील कर्मों का समन्वय ही यौवन है। यौवन के इन अनमोल उपहारों का सही साज-संभाल एवं इसका सत्प्रयोजन में नियोजन ही जीवन की वह तैयारी है, जहाँ पर अशक्त बुढ़ापे की काली छाया कभी नहीं पड़ती। यौवन के सुदृढ़ देह एवं सबल मन से ही भौतिक एवं आध्यात्मिक जीवन के कष्टप्रद क्षणों का अभ्यास किया जाता है और उसे जिया सकता है।

इन्हीं दिनों जीवन के नवीनतम सूत्रों को खोजना संभव है और खोजे हुए सूत्रों को जीवन में उतारकर देखने का अलग प्रयोग भी इसी मजबूत अवस्था में किया जा सकता है।

यौवन अर्थात् 20 से 35 वर्ष की अवधि जीवन साधना के लिए उपयुक्त मानी जाती है। राम, कृष्ण, बुद्ध, ईसा, स्वामी विवेकानन्द, श्री अरविन्द आदि सभी योगी एवं तपस्वी जीवन की इस सच्चाई को समझते थे। उन्होंने अपनी उग्र एवं प्रचंड साधना व तपस्या यौवन के इसी पड़ाव में पार किया था तथा यौवन की प्रचंड उर्जा को विषय भोग में बरबाद करने की अपेक्षा जीवन को साधने में, नियोजित करने को अहमियत दी। इसी कारण वे अपने जीवन के अंतिम क्षणों को भी यौवन के समान उत्साह एवं उमंगों के साथ जी गए। आद्यशंकर और स्वामी विवेकानन्द ने क्रमशः 32 एवं 40 वर्ष की उम्र में ही शरीर को त्यागने का साहस किया।

हम भी ऐसा जीवन जी सकते हैं। हम भी अलमस्त एवं बेपरवाह जीवन की लहरों में मस्ती पा सकते हैं, जीवन के अंतिम क्षणों तक को पूरे आनंद के साथ निर्भय होकर हम भी जी सकते हैं, परन्तु इसके लिए एक मात्र शर्त है कि आज और अभी से हमें अपने जीवन के अस्तित्व के प्रति गंभीर होना पड़ेगा। जीवन को साधने के लिए अपने सामर्थ्य के अनुरूप उन सभी सूत्रों को खोजना पड़ेगा जो कि हमें हमारी संभावनों एवं सामर्थ्यों से अवगत करा सके। यौवन ही जीवन को जानने-समझने की उपयुक्त अवस्था है। इसे राग-रंग से, विषय भोग से बचाकर संयम साधना में लगाना चाहिए।

सेवा निवृत्त



श्री चंदन कुमार
(लेखाकार)

शशि बाबू बिहार के मुख्य सचिव के पद से कल सेवा निवृत्त होने वाले थे। अतः आज उनका ऑफिस में सचिव के रूप में आखिरी दिन था। रामू शशिबाबू का चपरासी था। हर रोज की भाँति शशिबाबू के आने के पूर्व उसने उनके ऑफिस को नई दुल्हन की तरह चमका दिया था। शशि बाबू नित्य की भाँति निर्धारित समय पर ऑफिस में दाखिल हुए, ऑफिस के सभी अधीनस्थ कर्मचारियों ने शशिबाबू का अभिवादन किया और अपने-अपने कामों में लग गए। वैसे तो ऑफिस का अंतिम दिन प्रायः हरेक सरकारी कर्मचारियों का फेयरवेल पार्टी का दिन होता है, जिसमें उसके सहकर्मी उनकी विदाई करते हैं और सारे स्टाफ को कार्य नहीं करना होता, परन्तु शशि बाबू ने अपने कर्मचारियों को फेयरवेल देने से मना कर दिया था। साथ ही उन्होंने सभी को अपने नियमित कर्तव्य को पूरा करने का निर्देश भी दे रखा था। शशि बाबू की ईमानदारी, कर्तव्यनिष्ठा और समय पाबंदी के सभी कायल थे और अधीनस्थ कर्मचारी उनसे प्रायः डरा करते थे। अतः कार्यालय के सभी कर्मचारी नित्य की भाँति अपने-अपने कार्यों में व्यस्त हो गए। शशि बाबू जैसे ही अपने चैंबर में घूसे, पीछे से उनका चपरासी रामू, हाथ में गुलदस्ता और पश्मीना साल लेकर अन्दर आया। शशि बाबू ने रामू को देखते ही कहा, ये क्या लाए हो रामू?

मैने तो मना किया था कि मुझे कोई गिफ्ट ना करे ओर ना ही फेयरवेल ऑर्गनाईज किया जाय। इससे सरकार का एक किमती दिन व्यर्थ में बर्बाद होगा।

रामू-जानता हूँ साब! आप नियमों के पक्के हैं पर नियमों से जीवन को दिशा दी जा सकती है। जीवन तो प्यार और स्नेह से ही कटता है। ये साल और फूल मेरे उसी स्नेह और हार्दिक संवेदना के प्रतीक हैं। मेरी आपसे यह अंतिम मिन्नत है, इसे स्वीकार कर लिजिए।

शशि बाबू - (हँसते हुए)-तुम्हारी मिन्नत में तो मैं नौकरी ज्वाइन करने के साथ ही बंध गया था और आज तक उससे आजाद नहीं हो पाया।

रामू-यह आपकी दरियादिली है साब, वरना आई0ए0एस0 अधिकारी तो चपरासी को जूते के नोक पर रखा करते हैं। रामू ने नौकरी शशि बाबू के सामने शुरू की थी। संयोग से आज शशिबाबू उसके सामने सेवा निवृत्त हो रहे हैं।

शशि बाबू - ऐसी बात नहीं है, रामू पद बड़ा नहीं होता, इंसान बड़ा होता है, उसके कर्म बड़े होते हैं। सोचों जरा गाँधीजी को। आज भी लोग उनके कर्मों के कारण ही उनको याद करते हैं।

रामू- छोटी मुँह बड़ी बात साब! यदि आप बुरा न माने तो मैं एक बात कहूँ।

शशि बाबू - हाँ-हाँ कहो-कहो।

रामू- इसी गलत नजरिये के कारण ही आप एक सफल इंसान नहीं बन पाये साब!

शशि बाबू को जैसे रामू के शब्द हथौड़े की चोट की तरह लगे और वे निःशब्द से एकटक उसे देखते रह गए।

रामू-आपको बुरा तो नहीं लगा साब!

शशि बाबू अरे! न्हीं-नहीं ! पर ये तो बताओं कि सफल कैसे नहीं हूँ।

रामू-बड़ी सीधी सी बात है साब आज आपसे न तो मेम साब खुश है और ना ही आपके बच्चे व सहकर्मी। अधीनस्थ कर्मचारी तो कब से ये बाँट जोह रहे है कि आप सेवा निवृत्त हो, तो आपसे जान छूटे। आप खुद सोचिए जो आपके साथी आपके साथ-साथ नौकरी में आए थे वे कहाँ है और आप कहाँ ?

शशिबाबू - अरे! रामू तुमको राजा भोज और गंगू तेली का भी फर्क पता नहीं। आज मेरा नाम टी०एन०शेषन, के०जे०राव, कुणाल जैसे ईमानदार और कर्तव्यनिष्ठ सेवकों में शामिल हैं। मुझे पीढ़ी दर पीढ़ी लोग याद करते रहेंगे।

रामू-यही तो गंभीर समस्या है ईमानदारी का। उसे अपने रंग के अलावा कोई दूसरा रंग नजर नहीं आता। वह इतना अदृश्य हो जाता है कि भविष्य को वह देख नहीं पाता। सिर्फ वर्तमान में डूबकी लगाता रहता है और यही समझता है कि वह भविष्य संवार रहा है।

शशिबाबू-तुम्हारे कहने का मतलब क्या है ?

रामू- कहने का मतलब तो एकदम सिम्पल है साब! आप जिसे युगों युगों तक याद रखने की बात करते हैं, लोग उसे कुछ महिनों या कुछ सालों में भूल जाते है। और फिर आपके मरने के बाद कोई आपको याद करे तो इससे आपको या आपके परिवार को क्या मिलेगा ? जबकि आप तंगी और कमी में जी रहें है।

आप खुद सोचिए, सरकार ने आपको इतना बड़ा ओहदा दिया, इस ओहदे के मुताबिक सामाजिक, पारिवारिक जिम्मेदारियों को जिसके लिए कितना वेतन दिया आपको ?आपको छोड़िए, मुझकों देखिए। यदि मैं सिफ सैलरी के सहारे रहता तो आज मेरे बच्चे भूखे मर गए होते!

रामू-रिश्वत नही साब सेवाशुल्क।

करोड़ों अरवों की फाईलें ढोते-ढोते खुद मैल मैंने झाड़ लिए, तो इसमें बुराई क्या है ?

आज इसी से तो मेरे दोनो बेटे डाक्टर हैं, कलकता और पटना में बंगला है। पत्नी सभी धाम घूम चुकी है और मैं भी स्वस्थ और आपकी सेवा में तत्पर!

शशि बाबू - मुझे विश्वास नहीं होता!

रामू तुमने तो मेरे विश्वास को तोड़ दिया।

रामू-अरे! साव मुझे माफ कर دیجिए पर आपके सिवा सभी यहाँ सेवाशुल्क लेते हैं। परन्तु आपकी नजरों से बचकर। बेचारे डरे रहते हैं कि कहीं आपको पता न चल जाए। मैंने भी बस प्रेमचन्द्र की शिक्षाओं का अनुसरण किया। वो आपने कहानी पढ़ी होगी “नमक का दरोगा” कैसे इस कहानी में प्रेमचन्द्र ने बताया है उपरी आय तो बहता हुआ सोत्र है जिससे सदैव प्यास बुझती रहती है।

शशि बाबू को अब क्रोध आ चुका था पर उन्होंने क्रोध पर काबू करते हुए रामू को अपने चैंबर से बाहर जाने को कहा। रामू ने अपने साव का आदेश का पालन किया। रामू के जाने के बाद शशिबाबू का क्रोध धीरे धीरे शांत हुआ। एकांत में शशिबाबू के कानों में राम का एक एक शब्द पुनः गुंजने लगा। शशिबाबू सोचने लगे वास्तव में आज मेरे पास क्या है ? दो बेरोजगार बेटे, एक बिन ब्याही बेटी और पिता जी का पुराना पैतृक घर जो अपनी अंतिम अवस्था में है। सेवा निवृत्ति के बाद गाड़ी और आवास खाली करना होगा तब गाँव वापस लौटने के सिवा कोई उपाय न था। शशिबाबू को बार-बार वो सारी बातें याद आने लगी जब नोटों से भरे बैग उनके चैम्बर में आने को बेताब थे। बस उनके एक इशारे की देर थी, लेकिन तब उनको ईमानदारी और कर्तव्यनिष्ठ की भूल सवार थी। आज उनका चपरासी उनसे ज्यादा सफल आदमी है। ईमानदारी का दंभ बखानने बाला अपने साथ रहने

वाले सहकर्मी तक को ईमानदार नहीं बना सका, इससे बड़ी हार और क्या हो सकती है ?

लोग यदि याद करेंगे तो तब भी कितने दिनों तक ?

सारे बाते साचते-सोचते शशिबाबू के आँखों में लाचारी के दो बूंद छलक पड़े। उन्होंने बेल दवाकर रामू को बुलाया और उसे जोर से अपने गले लगा लिया। रामू प्रेचन्द की कहानियों के सिवा ज्यादा पढ़ लिखा नहीं था। अतः वह शशि बाबू की लाचारी को पढ़ नहीं सका।

शाम होते ही शशिबाबू ऑफिस से निकलकर उसे अंतिम बार निहारते हुए अपने सरकारी आवास की तरफ चल पड़े, सभी लोगों ने उन्हें अंतिम विदाई के तौर पर इकट्ठा होकर फूलों का गुलदस्ता भेंट किया। इसे शशिबाबू ने बड़े प्यार से स्वीकार कर लिया।

अगली सुबह जैसे ही शशिबाबू के हाथों में पेपर आया उनके चेहरे की चकम मानों दिवाकर को भी फिकी कर रही हो। वो फटाफट नित्य की भोंति तैयार होने लगे। उनके घरवालों को ये बात समझ नहीं आई कि जब वे सेवा निवृत्त हो गए हैं तो ऑफिस जाने की तैयारी क्यों करने लगे। शुरु में वे समझे की शायद अपने कामजात से जा रहे हो, जिससे पेंशन सही समय पर चालू को सके।

तैयार होने के बाद विगत 60 सालों के विपरीत आज शशिबाबू ने अपनी पत्नी को बड़े प्यार से पास लाते हुए कहा भाग्यवान मेरी नौकरी 2साल के लिए बढ़ गई है। सरकार ने कल रात को यह फैसला लिया है कि डायरेक्ट आई0ए0एस0 कैडर के सेवा निवृत्ति समय 62वर्ष होगा। यह फैसला तत्काल प्रभाव से लागू है। अतः अब मैं 2साल और नौकरी कर सकूँगा।

शशिबाबू ने इस उत्साह का घर के सदस्यों पर कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ा। वे जानते थे कि 60 सालों की नोकरी में शशिबाबू कुछ ऐसा नहीं कर सके, जिससे उनको लगे कि ये सचिव के परिवार के सदस्य है। पर इस बार शशिबाबू कुछ बदले-बदले से नजर आ रहे थे। कार्यालय पहुँचते ही उन्होंने रामू को सभी प्रतिवांछित फाइलों को मंगाया और उनका दो वर्षीय कार्यकाल लंबित रहित फाइलों का कार्यालय सावित होने जा रहा था। इस बीच शशिबाबू अब चारों महानगरों में 7 बंगलों के मालिक थे। उनके दोनों बेटे दो बड़े प्राइवेट फर्मों में निर्णायक हिस्सेदारी के साथ सी०एम०डी० के पदों पर कार्यरत थे। बेटी की शादी भी उच्चपदस्थ पदाधिकारी से हो गई थी। अब शशिबाबू की सेवा निवृत्ति की दूसरी पारी शुरू होने को थी। राम पूर्व की भाँति इसबार भी कार्यालय की सफाई कर चुका था। शशिबाबू की विदाई में फेयरवेल पार्टी सेकण्ड हाफ में ऑर्गनाइज की गई थी, पर जैसे ही शशिबाबू अपने चैबर में आए उनके पीछे 10 लोगो का समूह ने उनको कार्यालय में जबरदस्ती उठाकर उन्हें अपनी गाड़ी में बिठाया। कोई कुछ समझाता, इससे पूर्व ही उनकी गाड़ी धुआँ उड़ाती हुई सचिवालय गेट से बाहर जा चुकी थी।

कल के समाचार पत्रों की सुर्खी थी - शशिबाबू की सेवा निवृत्ति जेल की सलाखों की पीछे CBI ने उन्हें आय से अधिक संपत्ति के मामले में गिरफ्तार कर लिया था।

मेरा सफर



संजय कुमार ओझा
लेखाकार, प्र०-1

आंखों में छाये शून्यता एक दीप्तिहीन मुखगंडल से निकलता,
हर एक संदेश के प्रति उतरहीन, झुक रहा था मेरा मस्तक।
वही उलाहना, छोड़ गए अकेले हमसफर बनने का वादा करके,
न चलना मालूम है, न ही रास्ता, मगर मंजिल दे रही है दस्तक। 1।

याद दिलाया मुझे कहकर, रास्ते कट रहे थे सफर के साथ चलते चलते,
और थकने का एहसास भी नहीं हुआ मौसम के बेरुखी से भरे उमंग में।
लेकिन शेष रास्ते चिढ़ाते हैं मुझे देख कर अशक्त अकेला तैयार चलने को
पानी के बुलबुले के हश्म का याद दिलाया मुझे, अस्तित्व के इसजंग में। 2।

चलना बिना हमराही के तन्हाई में यूँ ही किसी अनजान पथ पर
खोखला नहीं वह दावा, जिसमें शिकस्त मिलती है मुकद्दर बनकर।
पर जहाँ मंजिल भी अपना मुँह चुराता नजर आये कर्जखोर सा,
वहाँ कैसे मिटा सारी बाधा को, जीत जाउ यह जंग सिकंदर बनकर। 3।

आज तो मरहम से भी नहीं भरते वह धाव जो बनते थे,
उन्ही रास्तों पर पड़े काँच के टुकड़ों से, नुकीले काँटों से।
वह अनायास ही भर जाते थे कभी बिन औषधि के ही,
सिर्फ उनके चेहरे के निश्चल भाव एवं मुस्कुराहटों से। 4।

अब तू ही बता ये दिल कैसे बढ़ाउ वह हाथ,
जिसकी जरूरत है किसी अशक्त प्राण को।
कैसे कहूँ उससे जिसको पार करना है दरिया,
न कशती है कोई, न ही खेनेवाला जलयान को। 5।

आते हैं गम भूलाने सब इसी मयखाने में,
सितारों से सजी रंगीन शाम है यहाँ।
पर मैं तो साकी हूँ इस मयखाने की,
मेरे आसूओं से बनती है जाम यहाँ। 16।

अपनी ही आग से स्वयं को जलते देख,
याद आया आसमान का एक टूटा तारा।
आंधियों में लिए दीया चलना है मुकद्दर मेरा,
सनसनाती हवाएँ ही बची हैं अब मेरा सहारा। 17।

रास्ते को और इंतजार करवाना अपने सफर के लिए,
हरगिज मुनासिब नहीं होगा किसी राही के लिए,
महफूज रखना है कौरवा को रखकर अपने पनाहो में,
जिसे छोड़ नहीं सकती तन्हा, किसी तबाही के लिए। 18।

तू न यूँ मायूस होना मुझे सफर में अकेला जान के,
तेरी यादे मेरी शक्ति बनकर प्रेरित करती है चलने को।
इतिहास बन जाएगी मेरी यह अनन्त यात्रा, यदि
आसमां को भी धरती पर लाना पड़े रीत बदलने को। 19।

मैं सफर में चल पड़ा हूँ इसलिए नहीं की मुझे चलना है,
बल्कि सच करना है उनके उस अधूरे अरमान को।
मुस्काते हुए जिसने चलना सिखलाया हंस कर सदा,
मेरी यही सच्ची श्रद्धांजलि होगी उनकी मुस्कान को। 110।

प्रमाणित किया जाना है कि यह मेरी स्वरचित मौलिक रचना है जो अप्रकाशित है।

प्यार की कीमत



संजय कुमार ओझा
लेखाकार, प्र०-1

तुम न यू ख्वाब बनकर आया करो, यू न तन्हा मुझे तुम रुलाया करो।
हाल मेरा बहुत अब नाराज है, ना सितम इस कदर मुझ पर ढाया करो।

अब खानी न जीवन की दरिया में है, मिटने वाला है यह बुलबुले की तरह।
तेरे वादे की कश्ती में मझधार में, खुद बनके माँझी इसे न डूबाया करो।

कॉच जैसा जिगर बिखरा है टूटकर, हर गली में पड़े खूँ की छीटे मेरे।
फूल एक एक उड़ा ले गई है हवा, चमन में न तुम गीत गाया करो।

दर्द ऐसा दफन मेरे सीने में है, हाल उसका बर्यो कर न पाउंगा मैं।
धूँट कर मरना बना है मुकद्दर मेरा जश्न मातम में तुन न मनाया करो।

भूल जाऊ तुम्हे है ये मुमकिन नहीं, तुम न आओगे यह भी है मालूम मुझे।
हर लम्हा खड़ा बनकर कातिल यहाँ, बनकर शोला न मुझको जलाया करो।

मुझे रोने दो छुपके शबनम की तरह, नहीं जलवा दिखाना है रूसवाई का।
किस बेरहमी से धोटा गला प्यार का, प्यार में ना मुझे आजमाया करो।

प्यार करना इबादत का हमनाम है, फूल पूजा का तुमको बनाये है हम।
कितने जन्मों का रिश्ता है तुझसे मेरा पर्दा इस राज से ना हटाया करो।

छेड़ दो मुझको घायल तड़पते हुए, फिर भी तुमसे खफा हम न होंगे कभी।
प्यार मे ही जिए और मरेगे भी हम, इसकी कीमत न हरगिज लगाया करो।

प्रमाणित किया जाता है कि यह मेरी स्वरचित मौलिक रचना है जो अप्रकाशित है।

“तितली को मत पकड़ो”



वैद्य (डॉ०) रामेश्वर राम
सेवा निवृत्त वरीय लेखाकार

खेत में लगे सरसों के पीले-पीले फूलों पर जब तितलियाँ बैठी है,
तब बड़ा सुहाना लगता है।
उसका मनोहारी रंग बड़ा सुहाना लगता है,
उसका मनोहारी रंग बड़ा सुहाना लगता है।
बचपन में हम लम्बी-लम्बी तितलियों को पकड़ा करते थे,
और उसके पूंछ में धागा बाँधकर पतंग की तरह उड़ाते थे
दादाजी जब देखते थे तब लाठी लेकर दोड़ाते थे,
और मेरे दोनों कान पकड़कर ऐंठ करते थे।
तितलियाँ बोलती है, तितलियाँ बोलती हैं कि हम बहुत नाजुक है,
हमें मत पकड़ो-हमें मत पकड़ो सिर्फ निहारो।।

“जिंदगी का कड़वा सच”



ज्योति देवी,
एम0ए0 (हिन्दी) प्रथम श्रेणी,
पुत्री वैद्य (डॉ0) रामेश्वर राम
सेवा निवृत्त वरीय लेखाकार

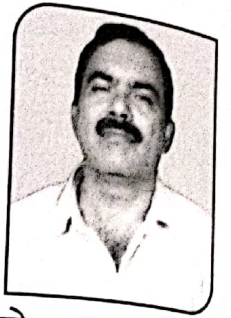
एक लड़की जब संसार में जन्म लेती है,
तो उसे जिंदगी के हर कठिन संघर्षों से,
गुजरना पड़ता है इसकी शुरुआत,
जन्म लेते ही शुरू हो जाती है।

क्या लड़की होना एक अभिशाप है ?
अगर ऐसा है तो लोग लड़की क्यों,
पैदा करते हैं ? क्या उसे एक सुखी,
जीवन जीने का अधिकार नहीं है ?

उसे हर मोड़ पर किसी न किसी,
का डर होता है, उसके दर्द को,
कोई क्यों नहीं समझता है ?
चारों तरफ उसे दबोचे जाने,
का एक भय बना रहता है।

वह कहीं भी सुरक्षित क्यों,
नहीं होती, न घर, न बाहर,
सब जगह उसे अजीब नजरों,
से देखा जाता है, क्या,
यही लड़की का जीवन है ?
इन सब बातों का जवाब,
आपके पास है ?

“केदार का बचपन”



हरे राम प्रधान
सेवा निवृत्त पर्यवेक्षक।

केदार एक साधारण किसान का लड़का था। बचपन से ही शान्त स्वभाव का था। अक्सर अपने उम्र से बड़े बच्चों के साथ खेलता था, तथा स्कूल जाने से कतराता था। उसके पिताजी जब भी उससे स्कूल जाने को कहते थे, वह कोई न कोई बहाना बनाकर घर पर ही रह जाता था। कभी पेट दर्द का बहाना तो कभी देह में दर्द का बहाना बनाकर रोने लगता था, ताकी उसे स्कूल न जाना पड़े। माँ को देखकर जोरों से रोने लगता था, जिसका असर उसकी माँ पर पड़ जाता था, और वह उसे छाती से लगाकर चूप कराने लगती थी, और उसके पिता जी से कहती थी, कि लड़का ठीक-ठाक एवं निरोग होगा, तभी तो स्कूल जायेगा। मेरे लाल को कोई जबरदस्ती स्कूल जाने को नहीं कहेगा। माँ की बातों के आगे उसके पिताजी की कड़क आवाज बन्द हो जाती थी, और वे शान्त हो जाते थे, तथा केदार का स्कूल जाना रुक जाता था।

यह सिसिला एक-डेढ़ साल तक चलता रहा। इसी बीच केदार के अन्य दोस्त स्कूल जाने लगे, जिसके फलस्वरूप केदार कटा-कटा रहने लगा। पिता जी किसान थे, घर पर खेती होती थी गाय-वैल भी थे। केदार बड़ा होने लगा था, यह सोचकर कि उसका मन पढ़ाई में नहीं लगता है तो क्यों न उसे कोई दूसरा काम दिया जाय। यह सोचकर केदार के पिताजी उसे गाय चराने की जिम्मेदारी दे दियें, जिसे वह सहर्ष स्वीकार कर लिया और खुशी-खुशी गाय को चराने के लिए अन्य चरवाहों के साथ जाने लगा। इसमें उसका मन भी लगने लगा। प्रतिदिन का यह सिलसिला चलने लगा। केदार शाम को गाय चराकर अपने घर आता था उस

समय जब गाय को दुहने का व समय होता था यानि अन्धेरा हो जाता था। जबकि उसके दोस्त स्कूल से चार बजे छुट्टी होने पर घर आ जाते थे, और नास्ता करके मैदान में फुट-वॉल खेलने चले जाते थे।

एक दिन ऐसी घटना घटी की केदार के जीवन को ही बदल दिया। हुआ यों कि केदार अपनी गाय चरा रहा था। अभी शाम का समय नहीं हुआ था, तबतक उसके दोस्त स्कूल से घर आगये तथा नास्ता करके फुट-वॉल लेकर मैदान में खेलते चले आये। केदार को भी जिज्ञासा हुई कि आज हम भी फुट-वॉल खेले, और दोस्तों के साथ फुल वॉल खेलने लगा। खेल के दरम्यान वह यह भी भूल गया कि वह गाय चराने आया है। इसी बीच उसकी गाय किसी के खेत में चली गई और उसका खेत चरने लगी। खेत वाला की नजर पड़ी कि किसी की गाय उसका खेत चर रही है। वह गाय के पास आया और गाय को लेकर केदार के घर चला गया, तथा उससे सारी बातें बताई कि केदार गाय के साथ नहीं है। वह तो बच्चों के साथ फुटबॉल खेल रहा है। जब फुटबॉल का खेल खत्म हुआ तो केदार को अपनी गलती का एहसास हुआ और वह गाय को इधर-उधर खोजा पर कहीं पता नहीं चला। अंत में हार कर वह अपने घर गया। घर का नजारा देखते ही वह शर्मा गया। उपर से पिता जी की झिंझकी और उसके बाद उसपर मार पड़ने लग गई। माँ दोड़कर आई और पिताजी की मार से उसे बचाकर करके अंदर ले गई। मान-मनौवल के बाद भी उस रात केदार खाना नहीं खाया, और सोने चला गया। रात में उसे नींद नहीं आ रही थी। रात भर करवटे बदलता रहा, और सोचते रहा। क्यों न हम भी स्कूल जाना सुरु करें। स्कूल जाने से चार बजे छुट्टी हो जायेगी, और गाय चराने का झंझट तथा दूसरे के खेत में गाय के चरने की शिकायत भी नहीं आयेगी और सबसे बड़ी बात होगी की हम दोस्तों के साथ फुटबॉल का मजा भी ले सकेंगे। पढ़ाई से ज्यादा उसे खुशी हो रही थी कि फुटबॉल जी भर खेल सकेंगे। इसी-उधेड़ वून में कब उसकी आँख लग गई, उसे पता भी नहीं चला। सवेरे उठकर माँ के पास गया ओर विनती के साथ कहने लगा “माँ आज से मैं स्कूल जाऊँगा। पिता जी से कहकर मेरा नाम लिखवा दो” माँ को अपने कानों पर विश्वास नहीं हो रहा था। वह दूबारा केदार से पुछी मेरा बेटा स्कूल जायेगा। जवाब में केदार ने अपना सिर हिला दिया। माँ दौड़ी दौड़ी केदार के पिता जी के पास गई

और केदार की जिज्ञासा के बारे में बताई। माँ की बातों को सुनकर केदार के पिताजी को खुशी का ठिकाना नहीं। मन में सोचने लगे, जिसे स्कूल भेजने के लिए हमने क्या नहीं किया, परंतु वह स्कूल जाने के नाम से कतराता था, तथा कितने प्रकार का वहाना बनाता था, आज वह स्वयं स्कूल जाने को तैयार होगा। केदार के पिता जी केदार को लेकर स्कूल गये और मास्टर साहब से कहकर केदार का दाखिला करवा दिये। अब केदार नियमित रूप से स्कूल जाने लगा और मन लगाकर पढ़ने लगा। यह सब चमत्कार देखकर गाँव के लोग हैरान एवं चकित हो गये।

केदार चतुर एवं बुद्धिमान भी था, एक घटना उसकी बुद्धिमता की परिचायक है। एक दिन उसके पिता जी अपने हलवाहा के घर के छपर से कद्दू तोड़कर अपने घर लाये, तथा केदार की माँ को सब्जी बनाने के लिए दिये। केदार की माँ ने उनसे पूछा कि कद्दू कहाँ से आये है ? इन्होंने जवाब दिया कि भिखारी के छपर से तोड़कर लाये हैं। उनका हलवाहा जिसका नाम भिखारी था, वह जाति का हरिजन था। उसका नाम सुनते ही केदार की माँ उस कद्दू को धूल पर फेंक आई, और बोली की हरिजन के घर का कद्दू खाकर जात देना है क्या ? वह देखकर केदार को बहुत बुरा लगा उसने ठन लिया कि माँ को इस अन्ध-विश्वास से बाहर निकाल कर रहूँगा।

एक दिन की बात है, केदार के पिता जी कही बाहर चले गये थे। माँ ने केदार से कहा कि बेटा पिता जी नहीं है, आज जाकर तुम सब्जी खरीदकर लाना केदार तो इसी मौके की तलाश में था ही। भिखारी के घर जाकर एक कद्दू तोड़ लिया और शाम होने के पश्चात अपने घर कद्दू लेकर गया। माँ समझे की बाजार गया था बाजार से कद्दू खरीद कर लाया है। कद्दू की सब्जी उसे बहुत अच्छी लगती है। माँ ने अच्छी तरह से धो-धाकर सब्जी बनाई और रात में माँ-बेटा रोटी के साथ कद्दू की सब्जी बड़ी चाव से खाये। केदार के पिताजी दूसरे दिन घर आ गये। पिताजी के सामने केदार माँ से पूछा कि “माँ रात को कद्दू की सब्जी कितनी अच्छी थी। माँ ने कहा हाँ, बेटा सब्जी बहुत स्वादिष्ट थी। माँ की बात सुनकर केदार हँसने लगा। केदार को हँसते हुये देखकर उसे पिताजी ने पूछा, क्या

बात है, क्यों हँस रहे हो कद्दू तोड़कर लाये थे, बाजार से नहीं। ऐसा सुनना था कि केदार की माँ भड़क गई और केदार को डाटते हुये बोली तुमने हमारी जात ले ली। हजिन के छप्पर का कद्दू खिलवा दिया। केदार ने माँ को समझाते हुए कहा “नहीं” माँ इससे जात नहीं गई, तुम्हारी, जानती हो तुलसी कद्दू को बाजार ले गया था बेचने को (तुलसी भिखारी का चचेरा भाई है) तिवारी बाबा उसी से कद्दू खरीदकर लाये और अपने घर ले गये। जब तिवारी बाबा (जो कि पंडीत जी है) का जात नहीं गया तो, तुम्हारा कैसे चला जायेगा यह सब मन की सोच है। इसमें कोई सच्चाई नहीं है। वही सब्जी जब हरिजन के घर में है तो अछूत हो जाती है, और वही सब्जी जब बाजार जाती है तो उसे सब खरीदकर अपने घर ले जाते हैं, तब वह अछूत क्यों नहीं होती है। केदार की माँ की आँखें खुल जाती हैं। वह दुलार से केदार के पीठ को थपथपाती है और केदार के पिता जी से कहती है देखते हैं जी, केदार कितना होशियार हो गया। यह सब स्कूल जाने का नतीजा है।

केदार बचपन से ही सच्चा था किसी प्रकार की वेईमानी नहीं करता था। एक दिन स्कूल के मास्टर साहब ने केदार तथा बुधन (बुधन केदार का सबसे अच्छा दोस्त था) को बाजार से कुछ सामान लाने को कहा। दोनों बाजार जाकर सामान लाये। एक चवन्नी बची थी, केदार मास्टर साहब को लौटाने लगा। मास्टर साहब सामान देखकर खुश हो गये और बोले जोओ तुम दोनों बांटकर आधा-आधा ले लेना। रास्ते में केदार सोचने लगा कि मास्टर साहब आधा-आधा लेने को कहे हैं। सो चार आने का आधा-दो आना होता है। दो आने यानि बारह पैसे। उस समय नया पैसा का चलन शुरू नहीं था, चवन्नी पच्चीस पैसे की होती थी। इस प्रकार दो-दो आने बांटने के पश्चात एक पैसा बच गया। दूसरे दिन मास्टर साहब को केदार एक पैसा लौटाने गया। मास्टर साहब दो-दो आना हम दोनों ने लेने के पश्चात एक पैसा बच गया सो लौटाने चला आया। मास्टर साहब उसके बिबेक को देखकर चकित रह गये।

जिन्दगी

शिव शंकर तिवारी
वरीय लेखाकार/लीगल सेल
10.06.2013

मुखड़ा:- सँभल जा! जिन्दगी ना फिर मिलेगी
कही पे गम, कही खुशियाँ मिलेगी।

अंतरा 1. सुनहरे स्वप्न में डूबा रहा तू.
परिन्दों की तरह, उड़ता रहा तू.
कभी सोचा नहीं सच्चाई पर तू.
इन सपनों में चुभन व धुटन मिलेगी।
सँभल जा। जिन्दगी ना फिर मिलेगी,
कही पे गम, कही खुशियाँ मिलेगी।

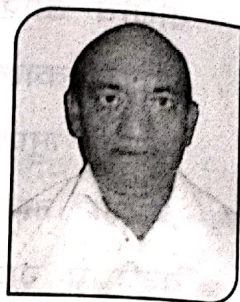
अंतरा 2. विलासों के भवन में,
गढ़ते अनमोल नगीने,
कहीं उलझा न ले ये,
मायावी हसीने,
यह अशकों का समन्दर है,
यहाँ भँवर व भ्रमजाल मिलेंगी।
सँभल जा! जिन्दगी ना फिर मिलेगी
कही पे गम-कही खुशियाँ मिलेगी।

अंतरा 3. तिवारी मुफलिसी पर, कभी था नाज करता,
दधिचि और बली का, सदा गुणगान करता,
चलित कालचक्र में उलझकर,
ना वो मुफलिस मिलेंगे, ना वो गुलिस्ताँ मिलेगा।
सँभल जा! जिन्दगी ना फिर मिलेगी
कही पे गम, कही खुशियाँ मिलेगी।

अंतरा 4. चमन में अमन हो,
कही पे दमन या शोषण नहीं हो,
दिलों में स्वार्थ और नफरत नहीं हो,
अरे ये, आर्यों की जर्मी है,
यहाँ कृष्ण व सुदामा मिलेगे।
सँभल जा! जिन्दगी ना फिर मिलेगी
कही पे गम कही खुशियाँ मिलेगी।

यह स्वरचित एवं अप्रकाशित कविता है।

दिशा-ज्ञान



वनवारी सिंह,
केयर टेकर, कल्याण अनुभाग

सुरज निकला मिटा अंधेरा,
जागो बच्चों हुआ सवेरा,

आया पुरवा हवा का बेरा,
पुरवा हवा करे चकोरा,

इतना सुन्दर समय न खोना,
होती है कुल चार दिशाएँ,

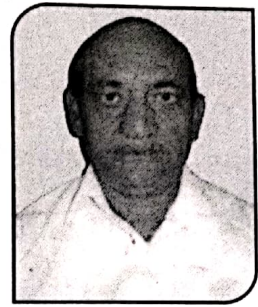
मुंह पुरव दिशा से सुरज निकले,
पिठ तरफ पश्चिम को मानों,

बाये तरफ उत्तर को जानों,
दहिना तरफ दक्षिण को मानों,

चारों तरफ दिशाएँ इस तरह पहचानों,
सुबह उठ कर घुमना जानों,

कहे वनवारी कविता को मानों,
आफिस का कार्य अपना जानों,

गुरु जी



वनवारी सिंह,
केयर टेकर, कल्याण अनुभाग

गुरुजी गाई के समझाई देहु तीनों गुनवाँ नाए
बकरी में चितकवरी शोभे,
लाड़ा में के मकड़ी शोभे,
दियर में ककड़ी शोभे,
बकरी, मकड़ी, ककड़ी गुरु जी, गाई के समुझाई देहु, तीनों गुनवाँ नाए
देवता घर के कोना शोभे,
हलुअइया घर के खोवा शोभे,
पसिया घर के दोना शोभे,
कोना खोना दोना, गुरु जी गाई के समुझाई देहु तीनों गुनवाँ नाए
अहीरा घर के लाठी शोभे,
रजवा घर के हाथी शोभे,
लोहरा घर के भाती शोभे,
लाठी, हाथी, भाथी, गुरु जी, गाई के समुझाई देहु, तीनों गुनवाँ नाए
कविता वना के कहे वनवारी अहीर घर में जनम हमारी,
घर गृहस्थी, रोजगार सं० ऑफीस में काम करी हम
इ, तीनों गुनवाँ नाए गुरुजी



शिवानी चन्द्रा
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक
हिंदी कक्ष

देख रहा है दरिया भी हैरानी से,
मैने कैसे पार किया आसानी से,
नदी किनारे पहरों बैठी रहती हूँ,
कुछ रिश्ता है मेरा बहते पानी से।

धूप हवा की यारी थी,
मेरे किस्मत बिगड़ा है मेरी मनमानी से
अब जंगल में चैन से सोयी रहती हूँ,
डर लगता था,
बचपन में वीरानी से,

दिल पागल है रोज पसिमा होता है,
फिर भी बाज नहीं आता मनमानी से,
अपना फर्ज निभाना एक इबादत है,
ये सीख सीखा है हमने एक हिन्दुस्तानी से।

एक तिनका

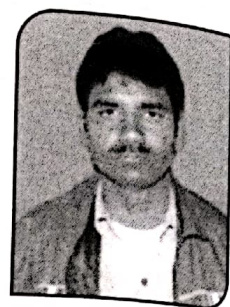
शिवानी चन्द्रा
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक
हिंदी कक्ष

मैं अभिमानों में भरा हुआ, ऐठा हुआ

एक दिन था मुंडेरो पर खड़ा,
आ अचानक दूर से उड़ता हुआ
एक तिनका आ मेरी आँखों में पड़ा,
मैं खीज उठा बेचैनी से,
आँख भी दुखने लगी लाल होकर
ऐठ बेचारी दबी पाँव भागने लगी,
जब किसी दंभ से निकल तिनका गया,
तब समझ ने मुझको ताना दिया,
ऐढ्ता तू किसके लिए इतना रहा,

एक तिनका है बहुत तेरे लिए,
जो हसरतें है वो निकालने की नहीं,
जो बात है वो चालने की नहीं,
गम क्या है, जो आसमां है मुझसे घिरा हुआ।

मुनीम बाबा का पुरुषार्थ



श्री अनन्त राम
व० लेखाकार

कुछ समय पहले की बात है एक गाँव में दौलत और गरीब नाम के दो भाई रहते थे। दोनों को ही तीन-तीन पुत्र थे। दौलत का किसी कारण वश स्वर्गवास हो गया। केवल अब गरीब अकेला बच गया। दौलत और गरीब के पुत्र में बड़ा मेल रहता था। घर का काम हो या खेती दोनों भाई के सभी पुत्र मिल जुल कर करते थे। गरीब का दूसरा प्रचलित नाम था मुनीम। लोग उन्हें मुनीम बाबा कहते थे मुनीम बाबा के पास एक कमंडल और एक डोरी हमेशा उनके पास रहता था। जब किसी को खेत में काम करते समय कहीं प्यास लगती तो मुनीम बाबा के कमंडल पर नजर जाता था। तब उस कमंडल से लोग कहीं न कहीं से पानी भर कर लाते थे और अपनी प्यास बुझाते थे। मुनीम बाबा दूसरों की मदद करने में हमेशा आगे रहते थे। दुखः सुख खेती बारी में लोगों की मदद किया करते थे एक बार एक आदमी तेज धूप में अपना खेत कोड़ रहा था। घर से मुनीम बाबा अपना हल बैल लेकर खेत जोतने जा रहे थे। जब उस आदमी को धूप में खेत कोड़ते देखें तो बिगड़ गये बोले हमारे रहते हुए इस धूप में खेत कोड़ रहे हो ? और उस आदमी को खेत जोत कर अपना खेत जोतने गये। मुनीम बाबा बड़े हिम्मती थे। एक बार अपने पोते को पीठ पर लेकर खेत जा रहे थे। पानी बरसा हुआ था। हाथ में हँसुआ लिये हुये थे। उनका पैर फिसल गया और वह गिर गये हँसुआ उनके हाथ में घुस गया और इस पार से उस पार हो गया। गाँव के कुछ लोग वहीं पर बैठे हुये थे। लोग मुनीम बाबा को उठाने के लिए दौड़ पड़े लोगों ने हँसुआ निकालना चाहा लेकिन वह किसी को हँसुआ निकालने नहीं दिये। खून से हाथ भीग गया मुनीम बाबा अपने से हँसुआ को धीरे-धीरे निकाल कर बाहर किये। लोग ताज्जुब करने लगे कि मुनीम बाबा को बहुत हिम्मत है क्योंकि दूसरा आदमी होता तो बेहोश हो जाता। किसी भी जाति के हो उनके गाँव के लोग उनकी इज्जत करते थे। एक बार

मुनीम बाबा के गाँव के बगल में डकैती पड़ गयी। बाबा बम दागने का आवाज सुने तो तुरन्त दौड़ पड़े। कुछ लोग, उनके चलते, उनके पीछे-पीछे दौड़ पड़े और चारों तरफ से आवाज किया गया। डकैत सब भाग गये। मुनीम बाबा बड़ा कड़क मिजाज के थे। उनके सामने घर की बहु-बेटी नहीं आती थी। यहाँ तक की गाँव को वहन बेटी या बेटे सब लोग उनका इज्जत करते थे। बाबा को कुछ औरते और बच्चे उनके पीठ पीछे भला बुरा कहती थी। क्योंकि बड़े लोगों की बात कुछ लोगों को पसन्द नहीं आती थी। मुनीम बाबा ऐसा काम नहीं करते थे कि किसी को बुरा लगे। मुनीम बाबा एक भक्त और खुसमिजाज आदमी थे। एक कोटवन नाम का धाम है जहाँ उनके गुरु रहते थे। जब उनके गुरु एक साधु नाम के बढ़ई के घर में आते थे, तो रातो दिन भजन होता रहता था। रातो भर आदमी का आना-जाना लगा रहता था। जब उनके गुरु चले जाते तब शाम को सब भजन सुनाते रहते थे। बच्चों को बताते थे कि हिम्मत सबसे बड़ी चीज है। बच्चे पढ़ते हैं मेहनत करते हैं लेकिन जब फेल हो जाते हैं तो माँ बाप के भला-बुरा कहने से जहर खा लेते हैं या फाँसी लगा लेते हैं। इससे उन्हें सख्त नफरत थी। मुनीम बाबा कहते थे कि तुझमें अगर लगन होगी तो दूसरी बार में परीक्षा फल मिल जाएगा तथा कोई जरूरी नहीं है कि आप लोग पास हो जाएंगे तो नौकरी मिल ही जाएगी। हो सकता है कि आपलोग को बढ़ियाँ कोई काम मिल जाए और आपलोगों आगे बढ़ जाए। बाबा आत्म हत्या से सख्त नफरत करते थे। उनका कहना था कि मनुष्य का जन्म बार-बार नहीं होता है। स्त्रीयाँ ससुराल में सास ससुर या ननद के अत्याचार से जहर खा लेती हैं। यह सब गलत करती हैं। उनका कहना था कि अपने मैके वाले से मदद माँगनी चाहिए। इतना बड़ा देश है, हमारा समाज है कोई ना कोई उसकी मदद करने के लिए तैयार हो जाएगा और भगवान का भी भरोसा करना चाहिए उसको न्याय जरूर मिलेगी। इस तरह सास ससुर या ननद को ऐसा नहीं करना चाहिए क्योंकि उसी बहु से घर का वंश चलता है। इसी तरह की ननद जब अपने ससुराल में जाती है तो अपने सास ससुर और पति पर धाक जमाती है अत्याचार करती है और एक दिन ना तो मैके जाने लायक रहती है और ना तो ससुराल में सुख मिलता है। एक दिन ऐसा भी आया कि मुनीम बाबा पर, जो दूसरों की सहायता करते थे उनका परीक्षा भगवान ने लेना शुरू कर दिए। मुनीम बाबा के तीन बेटा में से एक मझिला बेटा का तबियत खराब हो गया। उनको कॉलरा हो गया था। घर में रुपया पैसा रहते हुए घर के दो भाई बाप के रहते हुए मंझिला बेटा को नहीं बचा सके। उस समय उतना दवा उपलब्ध नहीं था बाबा का मानों

एक अंग कट गया। उसी दिन मुनीम बाबा का थोड़ा सा हिम्मत कमजोर हो गया। फिर तीन चार साल गुजरने के बाद कुछ हिम्मत जुटा पाए थे। फिर उनके छोटा बेटा का एक दुर्घटना में मृत्यु हो गई। इससे बाबा को सबसे बड़ा झटका लगा। मानो चारों तरफ से अंधेरा छा गया। लगता है कि भगवान उनकी हिम्मत की परीक्षा लेने पर उतारू हो गए हैं। बाबा के सामने दो बहु विधवा हो गईं। मंझिला बेटा के मात्र एक लड़की थी। और छोटा बेटा के चार बच्चे थे। बाबा के दो पोता और दो पोती थीं। बाबा का बड़ा बेटा पहले से अलग हो गए थे। बाबा बड़े संकर में फंस गए थे लेकिन उन्होंने हिम्मत नहीं हारी और सोच बिचार कर छोटी बहु के तरफ हो गए क्योंकि उसके छोटे-छोटे चार बच्चे थे और मंझिला बेटा के मात्र एक लड़की थी। उसकी शादी भी हो गयी थी। बाबा के पास कुछ खेती थी जिसे दोनों बहु को बाँट दिए। गाँव के एक राजराम नाम के यादव जी थे जिसके पास एक बैल था। मुनीम बाबा यादव जी के पास गए और बोले की एक आपके पास एक बैल है एक बैल हम लेते हैं। दोनों को मिलाकर हर साझा किया जाए। बात यादव जी को बड़ा अच्छा लगा। दोनों आदमी हर साझा कर लिए और खेती वारी करने लगे। खेती अच्छी तरह से होने लगी। कुछ दिन बीतने के बाद मुनीम बाबा का शरीर गिरने लगा और धीरे-धीरे बुढ़े हो चुके थे। इसलिए भारी काम नहीं कर पाते थे इसलिए उन्होंने खाट बीनने के लिए रस्सी बनाना शुरू किया। उनकी इतनी रस्सी बिकती थी उससे घर का खर्च किसी तरह चल जाता था। कुछ समय बितने के बाद बड़ी पोती का गौना कर दिये। बड़ा पोता भी कुछ बड़ा हो गया था बाबा को खेत में हाथ बटाने लगा। मुनीम बाबा अपना बड़ा पोता को बड़ी ज्ञान देते थे। उनका पोता उनके बात पर हमेशा ध्यान देता था। कुछ दिन बाद मुनीम बाबा का तबियत खराब हो गया इतना खराब हो गया कि खाट पर पड़े गये और उनकी सेवा छोटी बहु और बड़ा पोता मिलकर बहुत अच्छी तरह कर रहे थे। लेकिन उनका तबियत धीरे-धीरे बिगड़ती गयी। मुनीम बाबा को लगा कि हम नहीं बचेगे। तब बाबा अपने पोते को बुलाकर बोले- कि तुमको देने के लिए मेरे पास कुछ नहीं है। तब उनकी छोटी बहु बोली बाबा आपके पास सबसे बड़ा चीज है वह है। आपका आर्शीवाद। आपका पोता आपको बहुत सेवा किया है इसको आर्शीवाद दे देजिए। मुनीम बाबा अपना हाथ बड़ा पोता पर रखकर कुछ बुदबुदाए उसके बाद रोने लगे इसे देखकर सब कोई रोने लगा। उसके दूसरे दिन उनकी मृत्यु हो गयी। कुछ गाँव वालों की इच्छा थी कि मुनीम बाबा को पूरा गाँव में उनकी अर्थी घुमाई जाय और पूरे गाँव में उनकी अर्थी घुमाई गई।



श्री इन्द्रदीप सिंह धारीवाल, म० ले० (ले० एवं ह०) बिहार पटना द्वारा मुख्य अतिथि श्री आलोक धनवाँ जी (सुप्रसिद्ध हिन्दी कवि) को हिन्दी दिवस के अवसर पर पुष्प गुच्छ भेंट करते हुए ।



मुख्य अतिथि श्री आलोक धनवाँ जी के द्वारा हिन्दी दिवस के उपलक्ष्य में दीप प्रज्वलित करते हुए ।



मो० हाशिम अंसारी व० ले० अ०, हिन्दी दिवस के उपलक्ष्य में श्री राम हित, वरीय उप महालेखाकार को पुष्प गुच्छ भेंट करते हुए ।



हिन्दी दिवस समारोह में श्री राम हित वरीय उपमहालेखाकार का संबोधन ।